ज्ञानामृत

वर्ष 49, अंक 4, अक्तूबर, 2013 (मासिक)
मूल्य 7.50 रुपये, वार्षिक शुल्क 90 रुपये

शान्तिवन (आबू रोड) : 'शान्ति तथा सद्भावना के संवर्धन में मीडिया की भूमिका' विषय पर आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी जी, ब्र.कु. निर्वैर भाई, ब्र.कु.ओमप्रकाश भाई, ब्र.कु. आत्मप्रकाश भाई, भाता एस.एस. त्रिपाठी जी, भाता कमल दीक्षित, भाता आशिष गुप्ता, भाता मधुकर द्विवेदी, प्रोफेसर संजीव बनावत, ब्र.कु. शीलू बहन एवं अन्य। **शान्तिवन (आबू रोड)** : 'माइंड-बॉडी-मेडिसन' विषयक राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी जानकी जी, ब्र.कु.निर्वैर भाई, डॉ. अशोक मेहता, डॉ. प्रताप मिट्ठा, ब्र.कु.मुन्नी बहन, डॉ.बनारसी लाल शाह, नेपाल मध्य पश्चिम के क्षेत्रीय हेल्थ निदेशक डॉ.विकास तथा अन्य।

Regd. No. RAJHIN10563/65, Postal Regd. No. RJ/SRO/9559/2012-2014 Posted at Shantivan-307510 (Abu Road) on 1-6 of the month. Licensed to post without pre-payment No. RJ/WR/WPP/002/2013-2014

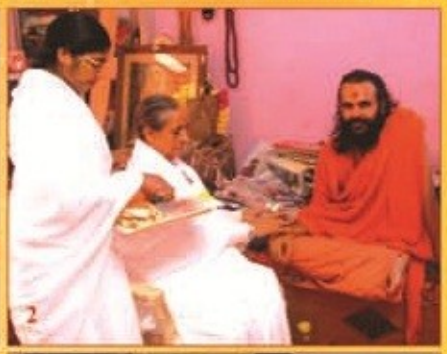

1.हरिद्वार- रक्षा बंधन पर्व पर संत गोष्ठी के पश्चात् समूह चित्र में महामण्डलेश्वर एवं महन्तगण के साथ ब्र.कु. प्रेमलता बहन, ब्र.कु. मीना बहन तथा ब्र.कु. गीता बहन। **2.वाराणसी-** काशी सुमेरू पीठ के शंकराचार्य स्वामी नरेन्द्रानन्द महाराज को राखी बाँधते हुए ब्र.कु. सुरेन्द्र बहन। **3.नई दिल्ली-** उज्ज्वल भारत के लिए शान्तिदूत युवा साइकिल यात्रा का शुभारंभ करते हुए दिल्ली की मुख्यमंत्री बहन शीला दीक्षित, केन्द्रीय युवा मामलों के सचिव भ्राता राजीव गुप्ता, राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, ब्र.कु. बृजमोहन भाई, ब्र.कु. आशा बहन तथा अन्य। **4.दुमका-** झारखण्ड के राज्यपाल डॉ.सैयद अहमद को राखी बाँधते हुए ब्र.कु. जयमाला बहन। **5.शान्तिवन (आबू रोड)-** कला एवं संस्कृति प्रभाग के रजत जयन्ती महोत्सव का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी जानकी जी, राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी, ब्र.कु. रमेश भाई, अभिनेत्री बहन रति अग्निहोत्री, अभिनेता भ्राता चंकी पाण्डे, अभिनेत्री बहन क्रिस्टीना अखीवा एवं अन्य। **6.दिल्ली (चांदनी चौक)-** उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश भ्राता वी.गोपाल गौड़ा को राखी बाँधते हुए ब्र.कु. विमला बहन। **7.इन्दौर (ओमशान्ति भवन)-** मध्य प्रदेश के वाणिज्य, उद्योग एवं प्रौद्योगिकी मंत्री भ्राता कैलाश विजयवर्गीय को राखी बाँधते हुए ब्र.कु. अनिता बहन। **8.शिलांग-** मेघालय के ऊर्जा मंत्री भ्राता क्लेमेंट मराक को राखी बाँधते हुए ब्र.कु. नीलम बहन।

संजय की कलम से ..

शक्ति पूजन का आध्यात्मिक रहस्य

शक्तियों के 108 नाम प्रसिद्ध हैं। वे सभी लाक्षणिक अथवा गुणवाचक नाम हैं। उनसे या तो उनके पवित्र जीवन का, उनकी उच्च धारणाओं का परिचय मिलता है या जिस काल में वे हुई, उसका ज्ञान होता है, या परमपिता परमात्मा के साथ तथा मनुष्यमात्र के साथ उनके संबंध का बोध होता है और या तो उनके कर्त्तव्यों का पता चलता है।

उदाहरणार्थ, शक्तियों के जो सरस्वती, ज्ञाना, विमला, तपस्विनी, सर्वशास्त्रमयी, त्रिनेत्री इत्यादि नाम हैं, उनसे यह परिचय मिलता है कि उनमें ज्ञान शक्ति, योग शक्ति और पवित्रता की शक्ति थी। 'कुमारी', 'कन्या' इत्यादि नामों से यह परिचय मिलता है कि ये कौमार्य व्रत (ब्रह्मचर्य) का पालन करती थी। उनके 'आद्या', 'आदिदेवी' इत्यादि जो नाम हैं, उनसे यह ज्ञात होता है कि वे सृष्टि के आदिकाल में अर्थात् सतयुगी सृष्टि की स्थापना के कार्य के समय हुई थी। इसी प्रकार, उनके 'ब्राह्मी', 'सरस्वती', 'भवानी' (शिव पुत्री), 'भव-प्रिया' (शिव को प्रिय), 'शिवमयी शक्तियाँ' इत्यादि नामों से यह बोध होता है कि वे प्रजापिता ब्रह्मा की ज्ञान-पुत्रियाँ थी और उन्हें परमात्मा शिव ने ब्रह्मा द्वारा ज्ञान शक्ति, योग शक्ति तथा पवित्रता की शक्ति दी थी।

देवियों के अलौकिक और कर्त्तव्यवाचक नाम

देवियों के दैहिक जन्म से संबंधित नाम और माता-पिता तो भिन्न थे परंतु जब उन्होंने प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा परमात्मा शिव से ज्ञान प्राप्त किया और परमपिता परमात्मा से आत्मिक संबंध जोड़ा तब उनके सरस्वती, शारदा, ज्ञाना, ब्राह्मी, कुमारी इत्यादि अलौकिक नाम प्रसिद्ध हुए। तब उन्होंने अन्य मनुष्यों को भी ईश्वरीय ज्ञान दिया। उस द्वारा उनके आसुरी लक्षणों का अंत किया और उनकी आत्माओं को शान्त और शीतल किया। इस कारण उनके शीतला, दुर्गा तथा असुर-संहारक शक्तियाँ इत्यादि नाम प्रसिद्ध हैं। प्रजापिता अथवा जगत पिता ब्रह्मा की कुमारी 'सरस्वती' को 'अम्बा' अथवा

अमृत-सूची

- नवरात्रि *(कविता)*..... 5
- वृद्धावस्था की तैयारी *(सम्पादकीय)* 6
- जब से पाया...*(कविता)* 7
- प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी 8
- 'पत्र' संपादक के नाम 10
- ईश्वरीय सेवा के साधनों में ...11
- जरा सोचो.....14
- प्रभु मिलन की प्यास 17
- दुख को सुख में बदलें..... 18
- सहना, सोने का गहना.....19
- बिना शर्त स्वीकारा 21
- हर कर्म करते उपराम.....22
- कर्मभोग का कर्मयोग में.....23
- नया जन्म 24
- रावण की चुनौती *(कविता)* .. 24
- कर्मगति के ज्ञान द्वारा..... 25
- ब्लाकेज दूर हो गए 27
- सचित्र सेवा समाचार..... 28
- सफलता का मंत्र..... 30
- श्रद्धांजलि..... 31
- सचित्र सेवा समाचार..... 32
- नाक-कान-गले की बीमारियाँ एवं उपचार.....34

शुल्क केवल '**ज्ञानामृत**' अथवा '**द वर्ल्ड रिन्युअल**' के नाम से ड्राफ्ट या मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- संपादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन- 307510 (आबू रोड) राजस्थान।**

शुल्क के लिए सम्पर्क करें - 09414006904, 09414423949
hindigyanamrit@gmail.com

ईश्वरीय शक्तियों और वरदानों से भरपूर अनेक मनभावन राखियाँ ज्ञानामृत कार्यालय में प्राप्त हुई हैं। स्नेही प्रेषक बहनों को हार्दिक आभार और दिल की दुआयें!

जगदम्बा भी इसीलिए कहा जाता है कि उन्होंने ज्ञान द्वारा सभी मनुष्यात्माओं को नया आध्यात्मिक जन्म अथवा मरजीवा जन्म दिया वरना आप समझ सकते हैं कि लौकिक अर्थात् दैहिक रीति से तो सारे जगत की कोई भी एक माता नहीं हो सकती। परन्तु आज भक्त लोग इन रहस्यों को नहीं जानते। यद्यपि वे सरस्वती को 'जगदम्बा' नाम से संबोधित करते हैं तथापि वे यह नहीं जानते कि 'जगतपिता' कौन हैं?

शक्तियों का गायन-वन्दन रात्रि को क्यों?

रात्रि में ही शक्तियों के गायन-वन्दन, रात्रि को ही जागरण, स्मरण इत्यादि की जो परिपाटी चली आती है, उसके पीछे भी एक महत्वपूर्ण इतिहास छिपा हुआ है। यहाँ 'रात्रि' शब्द उस रात्रि का वाचक नहीं है जो चौबीस घंटे में एक बार आती है बल्कि यह उस 'रात्रि' का बोधक है जो 'शिवरात्रि' के नाम से भी प्रसिद्ध है। लाक्षणिक दृष्टि से सतयुग और त्रेतायुग को 'ब्रह्मा का दिन' कहना चाहिए क्योंकि उस काल में जन-जीवन प्रकाशमय होता है। द्वापर और कलियुग को 'ब्रह्मा की रात्रि' कहना चाहिए क्योंकि उन दो युगों में मनुष्य अज्ञानांधकार में होते हैं, तमोगुणी होते हैं और तमोगुण नाम अंधकार का है।

जब कलियुग का अथवा ब्रह्मा की रात्रि का अंत होता है तब सभी आत्मायें आसुरी गुणों से पीड़ित, अज्ञान-निद्रा में सोई हुईं और आत्मिक शक्ति से हीन होती हैं। ऐसी अज्ञान रात्रि के समय परमपिता परमात्मा ज्योतिर्लिंगम शिव एक मध्यम वर्ग के मनुष्य के वृद्ध तन में अवतरित (प्रविष्ट) होते हैं और उनका दैहिक जन्म के समय का नाम बदलकर अब उसका कर्त्तव्यवाचक नाम 'प्रजापिता ब्रह्मा' रखते हैं। उनके मुखारविन्द द्वारा जो नर-नारियाँ ज्ञान सुनकर अपने जीवन को परिवर्तित करके नया आध्यात्मिक जन्म पाते हैं, वे ही सच्चे अर्थ में 'ब्राह्मण-ब्राह्मणियाँ' हैं। उन्हीं ब्रह्मचर्य व्रत धारिणी कन्याओं-माताओं को 'शिव-शक्तियाँ' कहते हैं क्योंकि वे ब्रह्मा द्वारा परमात्मा शिव से ज्ञान-शक्ति, योग-शक्ति और पवित्रता-शक्ति प्राप्त करती हैं। अत: उस रात्रि की याद में तथा उन शक्तियों की स्मृति में आज भी लोग 'रात्रि' ही को शक्तियों का गुणगान करते और नवरात्रि का त्योहार मनाते हैं।

अब भी नवरात्रों में भक्तजन शक्तियों के चित्रों अथवा मूर्तियों के सामने दीपक जगाकर कहते हैं – 'हे अम्बे, जैसे यह दीपक चहुँ ओर के अंधकार को हरकर प्रकाश कर रहा है, आप भी हमारे जीवन में प्रकाश कर दो, हमारे अज्ञानान्धकार को हर लो। माँ हमें भी शक्ति दो...।'

भक्ति करते हैं, प्राप्ति नहीं करते

आज लोग शक्तियों की भक्ति करते हैं परन्तु उनकी तरह शक्ति की प्राप्ति नहीं करते। वे नवरात्रि के दिनों में मिट्टी का दीपक जगाते हैं परंतु उस सदा जागती-ज्योति शिव से, जिसने कि शक्तियों को भी शक्ति दी थी, योग लगाकर स्वयं अपनी आत्मा की ज्योति नहीं जगाते। वे शक्तियों को तो 'तपस्विनी', 'ब्रह्मचारिणी' इत्यादि मानते हैं परंतु स्वयं केवल नवरात्रों में ही ब्रह्मचर्य का पालन करके फिर से पतित हो जाते हैं। वे सरस्वती को 'माँ' अथवा 'अम्बे' शब्द से पुकारते हैं परंतु वे उस अलौकिक एवं पवित्र माँ की तरह स्वयं पवित्र नहीं बनते। वे दस-बारह घंटे की अवधि वाली रात्रि को ही रात्रि समझते हैं, उन्हें 'शिव-रात्रि' का पता नहीं है। वे कहते हैं कि अब तो कलियुग है, आज के युग में पवित्र बनना असंभव है। परंतु वास्तव में ऐसा न समझकर उन्हें आज के युग को 'कर युग' समझना चाहिए और बजाय शाब्दिक स्तुति के स्वयं ज्ञानवान, तपस्वी, विमल और शक्तिवान बनने का पुरुषार्थ करना चाहिए क्योंकि अब वही 'रात्रि' आ चुकी है। इस कल्याणकारी रात्रि में ज्ञान द्वारा जो जागेंगे ही नहीं, वे शक्ति कैसे पायेंगे?

शक्तियों के हाथ में अस्त्र-शस्त्र

'शक्ति' से अभिप्राय आध्यात्मिक शक्ति अथवा ज्ञान, योग तथा पवित्रता की शक्ति से है, न कि माया की शक्ति या हिंसा करने की शक्ति। परंतु आज भक्त लोग समझते हैं कि काली या दुर्गा में शत्रुओं का अथवा असुरों का संहार करने की शक्ति थी। चित्रों में शक्तियों के हाथों में भाले, खड्ग इत्यादि भी प्रदर्शित किये होते हैं। परंतु हिंसाकारी व्यक्तियों का पूजन कभी नहीं हुआ करता। वंदनीय शक्तियों के पास असुरों का वध करने के स्थूल शस्त्र नहीं थे बल्कि आसुरी लक्षणों का अंत करने के लिए 'ज्ञान-शस्त्र' थे। मानो कोई व्यक्ति हमें उपदेश देता है कि ज्ञान रूपी तलवार से काम रूपी असुर को मारो। इस उपदेश को चित्रकार चित्र के रूप में अंकित करते समय हमारे हाथ में तलवार दिखायेगा और हमारे सामने काम को भयानक असुर के रूप में खड़ा कर देगा। इसी प्रकार शक्तियों की अनेक भुजाएँ तथा उनमें नाना प्रकार के अस्त्र-शस्त्र दिखाने का भी यही अभिप्राय है कि काम, क्रोधादि आसुरी लक्षणों का अंत करने के लिए उनमें बहुत शक्ति थी और ज्ञान की अनेक धारणाएँ थी।

जगदम्बा सरस्वती और श्री लक्ष्मी

माया पर विजय प्राप्त करके जगदम्बा सरस्वती इत्यादि शक्तियों ने विश्व का चक्रवर्ती स्वराज्य पाया था। इसलिए वर्ष में एक बार नवरात्रि के पश्चात् विजयदशमी का त्योहार (जो कि स्त्री और पुरुष के पाँच-पाँच विकारों पर विजय का प्रतीक है) मनाया जाता है। ईश्वरीय ज्ञान द्वारा उस विजय के फलस्वरूप सरस्वती जी ने भविष्य के जन्म में विश्व महारानी श्री लक्ष्मी का पद प्राप्त किया था। इसलिए ही उक्ति प्रसिद्ध है कि ज्ञान द्वारा नर से श्री नारायण और नारी से श्री लक्ष्मी पद की प्राप्ति होती है। परन्तु यह रहस्य आज किसी को भी ज्ञात नहीं है। जगदम्बा ब्रह्माकुमारी सरस्वती की तथा विश्व महारानी श्री लक्ष्मी की इस जीवन कहानी को जानकर अब हमें भी ज्ञान-शक्ति प्राप्त करनी चाहिए। उससे हम भी श्री लक्ष्मी की तरह अखुट धन-धान्य, सुख-संपत्ति और शांति प्राप्त कर सकेंगे। ❖

नवरात्रि

ब्रह्माकुमारी अंजना, अमृतसर

नवरात्रि का पर्व है बड़ा महान।
नौ दिन करते माँ का गुणगान।

कन्याओं का करते पूरा सम्मान।
वातावरण बन जाता भक्ति प्रधान।

माँ के जयकारों से मिट जाता अभिमान।
हर तरफ होता रहता यज्ञ व अनुष्ठान।

खिली रहती है चेहरे पर मधुर मुसकान।
घर लगता मंदिर, मानव देव समान।

पर बीत जाता यह सब स्वप्न समान।
रह जाती खोखली परम्पराएँ, कष्ट प्रधान।

जाग जाती आसुरी वृत्तियाँ, शैतान समान।
कन्या-पूजन करते भी, होता कन्या का अपमान।

वंश-वृद्धि की आड़ में पुत्र का सम्मान।
कन्या लगती मानो कोई अनुपयोगी सामान।

खिलने से पहले मुरझा जाती कली अनजान।
सिसकियों में घुट जाता दम और अरमान।

पर पाप करके भी भूल जाता इन्सान।
कौन है दुर्गा, कौन है काली? नहीं इसकी पहचान।

हर नारी के अन्दर है एक देवी विद्यमान।
खरा उतरना है उसे, पास कर हर इम्तहान।

आह्वान कर रहे हैं स्वयं शिव भगवान।
करना है फिर से जीवन-मूल्यों का निर्माण।

जिन्दगी जब तक रहेगी, फुर्सत ना मिलेगी काम से
कुछ तो ऐसा समय निकालो, प्यार करो भगवान से

सम्पादकीय ..✍

वृद्धावस्था की तैयारी

सरकार जब किसी को सेवानिवृत्त करती है तो आगे के जीवन तक पेंशन देती है। आजकल तो व्यक्ति के जाने के बाद उसकी विधवा को और उसके भी चले जाने के बाद यदि कोई निराश्रित संतान है तो उसे भी पेंशन मिलती रहती है।

पेंशन के पीछे सरकार का यह कृतज्ञता भाव होता है कि इस व्यक्ति ने शारीरिक श्रम कर सकने के योग्य समय को सरकार की सेवा में लगाया। अब जब यह शारीरिक रूप से अक्षम होता जा रहा है तो इसको कम से कम गुज़ारे लायक धन अवश्य दिया जाये ताकि शेष उम्र शान्ति से गुज़रे।

वृद्ध पशु के साथ व्यवहार

मानवीय समाज में जहाँ मनुष्य एक-दो के प्रति स्नेही-सहयोगी होकर रहते हैं वहाँ पशु-प्राणियों का सहयोग भी अति अनिवार्य है। वे भी कदम-कदम पर हमारे सहयोगी हैं। पशु जीवन-भर मालिक के इशारों पर चलता हुआ उसकी आमदनी में वृद्धि करता है परंतु वही पशु जब वृद्ध हो जाता है तो आमतौर पर हम उस के साथ क्या करते हैं? थोड़े-से पैसों के लालच में उसे कसाईखाने भेज देते हैं। क्या वो इतनी भी पेंशन का हकदार नहीं है कि हमारे बाड़े में बैठा रहे और रूखा-सूखा भूसा चबाता रहे या किसी पशुशाला में जाकर वृद्धावस्था के बाद स्वाभाविक मृत्यु का वरण कर सके।

पेंशन रूपी भरण-पोषण

पशु अनबोल है, उसकी पीड़ा सुनाई नहीं देती परंतु पशुओं के प्रति हम जो व्यवहार करते हैं, वह धीरे-धीरे मनुष्यों के प्रति भी होने लगा है। जीवन भर कमाने वाला, फटी धोती और फटे जूते पहनकर अगली पीढ़ी के लिए मकान, ज़मीन का प्रबंध करने वाला, जीवन के उत्तरार्ध में रोटी के दो टुकड़ों के लिए भी मोहताज हो जाता है। यह ठीक है कि वह आज नहीं कमा पा रहा पर हमारे सिर की छत और पैरों तले ज़मीन उसी की कमाई के हैं। जीवन भर की उसकी कमाई पर हक रखने वाले अधिक नहीं तो पेंशन रूप में उसके भरण-पोषण का प्रबंध तो अवश्य करें।

जीवन की सांझ का दीपक

पुत्र-पौत्रों की वृद्धों के प्रति ज़िम्मेवारी के साथ-साथ वृद्धावस्था के प्रति व्यक्ति की अपनी भी कुछ ज़िम्मेदारियाँ हैं। यह जीवन की शाम है। शाम होने पर हम घर में दीपक जलाते हैं और उसकी बाती और तेल दिन में ही तैयार करके रखते हैं। जीवन की सांझ के लिए भी आत्म-ज्ञान का दीपक चाहिए। उसकी तैयारी कब करेंगे? क्या सांझ आने पर? यदि सांझ के अंधेरे में दीपक या बाती या तेल न ढूँढ़ सके तो? इसी प्रकार जीवन की सांझ ढलने पर ईश्वरीय ज्ञान न धारण कर सके तो। उजाला रहते अर्थात् शरीर में बल रहते उसकी तैयारी कर लीजिये।

वृद्धावस्था के सभी लक्षण जवानी में

वृद्धावस्था की तैयारी युवावस्था में हो जानी चाहिए। वृद्धावस्था आये या ना आये, यह तो नियति निर्धारित करेगी परंतु हम अपना कर्त्तव्य तो पूरा करें और फिर आधुनिक समय की तो बात ही निराली है। प्रकृति भी जो कुछ देने के लिए वृद्धावस्था का इंतज़ार करती थी, वह सब युवावस्था में देकर अपने कर्त्तव्य की इतिश्री कर लेती है। आमतौर पर बालों की सफेदी, आँखों की कम ज्योति, दाँतों का हिलना-गिरना, जोड़ों का दर्द, बहरापन आदि वृद्धावस्था में ही शरीर में प्रकट होते थे परंतु आजकल ये सभी लक्षण किशोरावस्था तक से भी प्रारंभ होते देखे जा सकते हैं। आज जवानी तो रही ही कहाँ है? शॉर्टकट के इस ज़माने में, बचपन से सीधा बुढ़ापे में ही प्रवेश है। ऐसे परिस्थितियों में केवल

ईश्वरीय ज्ञान को वृद्धावस्था के लिए बकाया छोड़ देना, समय के बदलते तेवरों को न पहचानने की लापरवाही मात्र है। बेलें भी जब अंतकाल की ओर बढ़ने लगती हैं तो उनसे लगने वाले फल विकृत-से होने लगते हैं। सृष्टि शनैः शनैः एक महाभारी महापरिवर्तन के मुहाने तक पहुँचती जा रही है। अंतकाल की इन घड़ियों में हवा-पानी के प्रदूषण के प्रभाव में यह भी अशक्त और दुर्बल शरीरों का निर्माण कर पा रही है। जिस ईश्वरीय ज्ञान रूपी दीये की रोशनी में इन दुर्बल शरीरों को ढोने वाली आत्मा रोशन हो सके, उसे तो आज, नहीं-नहीं, अभी ही जलाने की आवश्यकता है।

अब साजन के घर जाना है

बच्चा जन्मता है तो कहते हैं, भगवान के घर से आया है। क्यों कहते हैं? क्योंकि भगवान के घर से आने जैसे लक्षण लेकर आया है। उसकी पवित्रता और प्रेम को देख सबको भगवान के गुण याद आते हैं। जब जायेंगे तो भी कहेंगे, भगवान के घर गया। इस आने और जाने के बीच के समय में हमने संसार में क्या किया? कहीं ईश्वरीय गुणों को भुला तो नहीं दिया? संसार से चाहे हमने कुछ भी लेन-देन किया हो पर लौटते वक्त वही बच्चे जैसी निश्चिन्तता और निश्छलता हमारे चेहरे पर हो। जैसा गुणों का शृंगार करके भगवान ने धरती पर भेजा, वैसे ही शृंगार को ओढ़कर पुनः उसके पास जायें, इसके लिए वृद्धावस्था रूपी थोड़ा-सा समय मिला है। **जवानी की भाग-दौड़ में गुणों का जो शृंगार उतर गया था, अब उसे ठीक कर लें, अब साजन के घर जाना है। सृष्टि-रंगमंच पर पार्ट बजाने की आपाधापी से हटकर, यह समय शांति से आत्म-अवलोकन करने का है। परंतु इसकी तैयारी भी पहले से चाहिए, नहीं तो मन तो पानी के बहाव जैसा है। जिन रास्तों पर बहने की पुरानी आदत है, वृद्धावस्था में भी उन्हीं रास्तों पर बहेगा।**

तब की तब नहीं, अब योजना बनाइये

भगवान पर पका फल चढ़ता है, कच्चा नहीं। पके फल की तरह वृद्धावस्था भी ईश्वर पर मन को चढ़ा देने (समर्पित कर देने) की पकी अवस्था है। जैसे फल भी निश्चित अवधि लेता है पकने में, इसी प्रकार मन भी ईश्वर अर्पण होने योग्य बने, इसमें समय लगता है। यह तैयारी आप आज से ही शुरू कर दीजिये। एक तस्वीर अपने सामने लाइये। आज आप जिन बाल-गोपालों से घिरे बैठे हैं, कल वे आपकी तरह अपने बाल-गोपालों से घिर जायेंगे, तब आप क्या करेंगे? 'तब क्या करेंगे' उसका जवाब आज खोजिये। यह नहीं कि तब की तब देखी जायेगी। बच्चों के भविष्य के साथ अपने भविष्य का भी प्रबंध कीजिये। तन, धन, जन के प्रबंधन के साथ-साथ मन को उल्लास में रखने और मन को सार्थक चिन्तन, ईश्वरीय चिन्तन देने की योजना भी बनाइये। योजना केवल बनाइये नहीं, उस पर अभी से कार्य करना शुरू भी कर दीजिये। वह योजना है, 24 घंटे में से प्रतिदिन एक घंटा ईश्वरीय ज्ञान श्रवण, राजयोग अनुभूति और दैवी गुणों की धारणा में लगाइये।

– ब्र.कु. आत्म प्रकाश

जब से पाया तेरा साथ

ब्रह्माकुमार वेदप्रकाश तोमर, खतौली (उ.प्र.)

वरदानों के मेघ बरसते,
खुशियों की होती बरसात,
अनहद नाद सदा बजते हैं,
जब से पाया तेरा साथ।

अब तेरी यादों में बीतें हर पल,
अब नहीं है कोई फरियाद,
काली रात अब बीत चुकी है,
होने को है स्वर्णिम प्रभात।

विस्मृति अब स्मृति में बदली,
अनादि स्वरूप की आ गयी याद,
नवजीवन में नवरस भर गया,
सुलझ गयी सब उलझी बात।

अब वो मेरा, मैं उसका हूँ,
बस रह गयी एक यही बात,
वरदानों के मेघ बरसते,
खुशियों की होती बरसात।

प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के

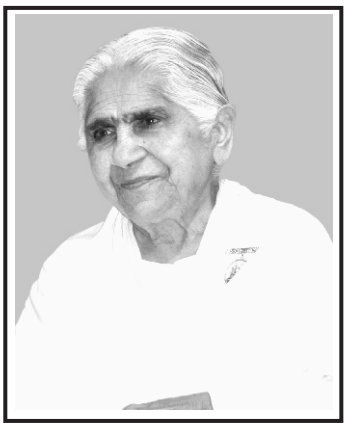

दिव्य बुद्धि के वरदान से विभूषित आदरणीया दादी जानकी जी, हर प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देकर आत्मा को संतोष से भर देती हैं। बुद्धिवानों की बुद्धि बाबा ने उन्हें ऐसी कला प्रदान की है कि वे उलझे कर्मों की गुत्थियाँ सुलझाकर समाधानस्वरूप बना देती हैं। प्रस्तुत हैं भाई-बहनों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के दादी जानकी द्वारा दिये गये उत्तर ...

– सम्पादक

प्रश्नः- पुरुषार्थ में बल कैसे भरें?

उत्तरः- समय नजदीक है। समय और स्थिति का ध्यान रखो तो पुरुषार्थ में बल बढ़ेगा। फल खाने से बल मिलता है। पुरुषार्थ से फल मिलता है। फल मिलता है तो बल मिलता है। मेरे को फल मिला पर दूसरों को क्या मिला? मेरे को फल और औरों को बल मिले। संपूर्णता मेरे गले का हार है, बड़ी बात ही नहीं। संपूर्णता अब सबके पीछे खड़ी है, इतना समय नजदीक है। समय के साथ-साथ प्राप्ति को स्पष्ट सामने रखो तो उलझन व आलस्य नहीं आयेगा।

प्रश्नः- हमारी आयु भी बढ़े, विकर्म भी विनाश हों – इसके लिए क्या चाहिए?

उत्तरः- हमारी आयु भी बढ़े, विकर्म भी विनाश हों – इसके लिए चाहिए योगबल। पहले बाबा, यज्ञ फिर है संगमयुग, निमित्त सेवा भाव से अपना भाग्य बना रहे हैं। भाग्य विधाता, वरदाता सदा मेरे साथ है। एक बार बाबा ने मुझे कहा था, बच्ची गुणदान अच्छा करती है। तो ज़रूर जब गुणों का धन होगा तब तो दान करेंगे। अवगुण देखने से विकर्म हो जाते हैं। पहले वाले विकर्म तो विनाश हुए नहीं हैं, अवगुण देखने से नये विकर्म शुरू हो गये। **किसी के अवगुण देखना, सुनना, मुख से बोलना, यह ब्राह्मणों के लिए सूक्ष्म पाप है।** सारी विश्व सेवा अमृतवेला और मुरली से शुरू हुई है। सेवा में निमित्त भाव और नम्रता भाव रहे। निमित्त भाव में अभिमान की फीलिंग नहीं आ सकती। **कभी भी कोई अपमान की फीलिंग आई माना अभिमान है। वह देही-अभिमानी नहीं रह सकते।** देह के संबंध से थोड़ा भी लगाव है तो विदेही कब बनेंगे! भगवान को कहते हैं चित्तचोर। उसने मेरा चित्त चुरा लिया माना मेरे चित्त में कोई बात न रहे। भले मेरी बुद्धि अच्छी है लेकिन चित्त में कोई पुरानी स्मृति है तो मन-बुद्धि-संस्कार कैसे होंगे! मनमनाभव-मध्याजीभव तो नहीं हो सकते। हमारे शब्दों में इतनी ताकत हो जो किसी का जीवन बन जाए। बाबा के जो वरदान और चरित्र हैं, उनसे हमारा जीवन बना है। किसी ने पूछा, तुम बाबा को कैसे याद करती हो? मैंने कहा, मैं याद नहीं करती हूँ, वह मुझे याद करता है और अपनी याद कराता है। बाबा की इतनी सारी रचना देखकर लगता है, वही सब कुछ कर-करा रहा है। मुझे संकल्प उठाने की भी ज़रूरत नहीं है। सब अपने आप हो रहा है, तो साकार से इतनी अच्छी पालना मिली है, उस पर फिर अव्यक्त की छाप लगी है।

प्रश्नः- श्रीमत पर चलने की शक्ति कब आती है?

उत्तरः- बाबा कहते, बच्ची, बाप के डायरेक्शन पर चलने वाला भी बहादुर चाहिए। श्रीमत पर चलने के लिए तो सतगुरु से सच्चा योग चाहिए। मम्मा हमेशा कहती थी, बच्ची, शिक्षा कभी खराब नहीं होती। शिक्षा सदा सम्भालकर रखनी चाहिए। मम्मा, मम्मा तभी बनी, जो बाबा ने कहा वह मम्मा ने किया। बाबा के समर्पण से, बाबा के साकार पार्ट से, यज्ञ अभी

चल रहा है, यह मेरा दिल जानता है। कर्म-अकर्म-विकर्म की गुह्य गति जानने के लिए बाबा ने बड़ी अच्छी बुद्धि दी है। मुझे अपनी बुद्धि नहीं है। दिव्य दृष्टि दाता, दिव्य बुद्धि दाता मेरा बाबा है इसलिए कभी कोई के चक्कर में नहीं आई हूँ, भगवान ने बचाकर रखा है। मैं उसकी कितनी महिमा करूं। मुझे दुनिया में ब्रह्मा बाबा का डायरेक्ट नाम प्रत्यक्ष करना है।

बाबा कहते, बच्ची, सी फादर, फालो फादर। जब यज्ञ में नई-नई आई थी तो एक बार बाबा ने कहा, बच्ची, तुम्हारे से कोई कुछ बातें करे, तो तुम उनकी बातों में नहीं आना। बाबा ने इतना बचाया है। बाबा कहता है, मैं अन्तर्यामी नहीं हूँ लेकिन अन्दर हमारे क्या है, वह सब जानता है।

मैं किसी की कमी देखेंगी तो किसी को मेरी अच्छाई दिखाई नहीं पड़ेगी, यह भी कर्मों का सूक्ष्म हिसाब-किताब है। किसी की कमी देखी, किसी की अच्छाई देखी तो मेरी दृष्टि कैसी होगी इसलिए हमें तो हर एक की विशेषता देखनी है। कमी वा अच्छाई पर प्रभावित नहीं होना है।

प्रश्नः- बुद्धि का ईश्वर प्रति समर्पण किसे कहते हैं?

उत्तरः- संगमयुग पर अन्तिम जन्म में बाबा ने हमारी बुद्धि को अपनी तरफ खींच लिया है। हमें अपनी बुद्धि ऐसे महसूस हो कि बाबा ने दी है, मेरी नहीं है। मेरी होगी तो अभिमान वाली होगी। बाबा कहता है, मैं बुद्धिवानों का बुद्धि हूँ। आज दिन तक प्रभु की लीला देख रहे हैं, बुद्धिवानों की बुद्धि का कमाल है। बाबा ने किसी भी आत्मा को बुद्धि दी तो उसमें ज़िम्मेवारी उठाने की क्षमता आ गई। सेवाओं की वृद्धि में साक्षी होकर देखो, हमारी बुद्धि कहाँ तक योगयुक्त है? पहले ज्ञान पूरा धारण करते हैं तो योग लगता है। बुद्धि को स्वच्छ, शान्त, श्रेष्ठ, दृढ़ संकल्प वाली बनाना है। अगर मेरा हाथ बाबा के हाथों में है तो सफलता हो जायेगी। कई कहते हैं, हम शुभ भावना तो रखते हैं परन्तु हमारी बुद्धि को खींचने वाला भी तो चाहिए लेकिन तुम देते जाओ तो वह आपे ही खींचेगा। हमें कौन समझा रहा है, कौन सुना रहा है, इसमें अटेन्शन बुद्धि को देना है। सारी बात बुद्धि की है । जब योग नेचुरल है तब राज़युक्त, युक्तियुक्त रह सकेंगे। कई अपनी बुद्धि बहुत चलाते हैं। कहेंगे, इसको ऐसे चलना चाहिए, इसको ऐसे नहीं चलना चाहिए। अरे, तुम माथा क्यों मार रहे हो! क्या बाबा ने तुम्हें ज़िम्मेवारी दी है? हमारी जवाबदारी है, खुद को बदलना। हम बदलेंगे तो जग बदलेगा। ऐसे नहीं, जग बदलेगा तो हम बदलेंगे। कई बार बुद्धि निकम्मी बातों में बहुत चलती है, फालतू बातों में, सोच में समय गंवाते हैं। ईश्वरीय संबंध में आकर सबसे प्यार से चलना है। पहले स्व, फिर बेहद सेवा है।

प्रश्नः- बुद्धि में स्व-दर्शन चक्र क्यों नहीं चलता रहता?

उत्तरः- हम औरों को देखने की बजाय अपने को देखें। औरों को देखने से अपने को देखना भूल जाता है। बाबा की कुछ शर्तें हैं – जब स्वदर्शन चक्र फिरायेंगे तब परदर्शन से मुक्त होंगे। ज़रा भी परदर्शन होगा तो स्वदर्शन चक्र नहीं चलेगा। स्वदर्शन चक्र, ज्ञान-योग की पराकाष्ठा, कमल फूल समान न्यारा-प्यारा – जिसके पास ये सब अलंकार हैं उसके लिए हर कार्य सहज है। कारण बताकर कार्य को मुश्किल नहीं करते हैं। हमारी और कोई ज़िम्मेवारी नहीं है सिर्फ अपने को सम्भालना है। बाबा-मम्मा यज्ञ के मालिक सदा ही निश्चिंत रहे हैं। प्रैक्टिकल करके दिखाया है। कभी बाबा ने यह नहीं कहा कि यह ऐसा है, यह ऐसा है..। जो मम्मा-बाबा की भाषा है, हम भी वही प्रयोग करें। हम किसके बच्चे हैं, अगर कर्मों से नहीं दिखाते तो माँ-बाप का शो कैसे करेंगे। पालना, पढ़ाई जो मिली है उससे सेवा कर रहे हैं, अपना भाग्य बना रहे हैं। त्याग से भी भाग्य, सेवा से भी भाग्य। जितनी त्यागवृत्ति है उतना भाग्य है। कहीं आँख नहीं डूबती है, यह भाग्य है। संगठन में हाज़िर होना भी भाग्य है।

'पत्र' संपादक के नाम

ज्ञानामृत हर माह में आए।
घर बैठे ज्ञान-स्नान कराए।।
ज्ञानामृत की भाषा शैली।
हर दिल को छू कर जाए।।
ज्ञानामृत का अमर संदेशा।
दया-प्रेम का रंग बिखराए।।
पाठक देते दिल में स्थान।
सच्चे दिल से करें गुणगान।।

– शकुन्तला पाठक,
सिविल लाइन, जबलपुर (म.प्र)

'पशुत्व के प्रतीक दो जहर' मई, 2013 का यह लेख बहुत अच्छा लगा। लेखक की सकारात्मक वृत्तियाँ जैसेकि नशा भुला देता है हम इंसान हैं और वासना पतित बनाती है, लेख को सफल सिद्ध करती हैं। स्वाद इंद्रिय जीभ द्वारा और वासना द्वारा विकृत सुख प्राप्त करने की कवायद भयानक है। इससे बचने का उपाय है आत्म-अभिमानी बनना। सद्विचार मंथन व्यक्ति को तेजस्वी और ऊर्जावान बनाता है और वृद्धत्व को धीमा करता है। ये मार्मिक विचार योगी जीवन का सार हैं। परमात्म ज्ञानी व सहज राजयोगी को गिराने वाली दो चीजें जीभ और वासना हैं जो अनियंत्रित होने पर एकदम गटर में डाल सकती हैं। इसलिए इन पर नियंत्रण करना ही है।

– ब्र.कु. अमित लोडम, अकोला

जुलाई अंक का संपादकीय लेख 'गुप्त दान महाकल्याण', दीदी मनमोहिनी जी की पुण्यतिथि पर लेख, सूरज भाई का 'कहनी है इक बात हमें – अपने साथी युवकों से', 'मनमानी और बुद्धिमानी', 'भय की भयानक बीमारी' और अनुभवों वाले लेख पढ़कर ऐसा लगा मानो डूबते को सहारा मिल गया। हीरे-मोती के समान बेशकीमती जीवन को मूल्यों से सजाने वाली मुक्ताहार ज्ञानामृत पत्रिका जन-जन का आधार बन गई है जिसे पढ़कर मानसिक रूप से मुर्दे में जान आ जाती है। अंधेरे में प्रकाश छा जाता है। कौड़ी तुल्य जीवन हीरे तुल्य बन जाता है। समय प्रति समय यज्ञ के इतिहास की महान आत्माओं से रूबरू कराने व ईश्वरीय सेवा से साक्षात्कार कराने के निमित्त भ्राता रमेश शाह को कोटिश: धन्यवाद!

– रामलखन विश्वकर्मा, रायपुर

ज्ञानामृत के जुलाई, 2013 अंक में 'कहनी है इक बात हमें – अपने साथी युवकों से' पढ़कर जीवन की धारा ही बदल गई। स्वयं लेखक होने के बाद भी मुझे चार बार इसे पढ़ना पड़ा, तब इसकी गहराई और समाज को बदलने के उच्च विचारों से अवगत हो सका। इस जादुई लेख का मुझ पर इतना असर हुआ कि इसकी 101 फोटोप्रति कॉलेज के युवकों में बाँट चुका हूँ। 'योग अग्नि से ही वासनायें शान्त होंगी – तब वसुन्धरा से विकारों की बदबू नष्ट हो जायेगी' – इस प्रकार के क्रांतिकारी विचारों से भरे इस लेख में लगभग 120 वर्ष पूर्व युगपुरुष स्वामी विवेकानन्द द्वारा भारत देश के युवाओं के प्रति देखे गये स्वप्न की स्पष्ट झलक नजर आती है। आज के गिरते सामाजिक ढाँचे को रोकने में ऐसे ही तेजस्वी लेखों की ज़रूरत एवं अहम भूमिका है।

– अशोक चेतन,
भेरायटी, सहरसा (बिहार)

जुलाई माह का सम्पादकीय 'गुप्त दान महाकल्याण' बहुत ही अच्छा लगा। कितनी सहज रीति से, इतनी गुह्य बात समझाना किसी साधारण मनुष्य के लिए बहुत ही मुश्किल कार्य है, धन्यवाद बाबा! आपकी प्रत्यक्षता इन लेखों से सहज ही अनुभव हो जाती है। अगस्त माह का संपादकीय 'आधि और व्याधि' हृदय को छू गया, 'काम पीड़ितों के लिए कौन-सा दवाखाना खोला?' वास्तव में यह सोचने को मजबूर कर देता है और आज के युग की वास्तविकता को भी दर्शाता है। ऐसे समय में शिव बाबा सहज रीति से सभी समस्याओं का समाधान बता रहे हैं।

– बल्लू राम, पादोवा (इटली)

दृढ़ता सफलता की चाबी है

ईश्वरीय सेवा के साधनों में परिवर्तन का इतिहास

● ब्रह्माकुमार रमेश शाह, मुंबई (गामदेवी)

परिवर्तन इस सृष्टि का नियम है। एक लेखक ने लिखा है कि नदी शाश्वत है परंतु उसके अंदर के पानी की बूँदें सतत् परिवर्तनशील हैं। अंग्रेजी में कहते हैं – Staticness is death and dynamism is life. शरीर में जब तक आत्मा है तब तक जीवन है। आत्मा के शरीर छोड़ने के बाद शरीर जड़ हो जाता है, इसे ही मृत्यु कहा जाता है।

प्यारे अव्यक्त बापदादा ने कहा है कि विज्ञान के कई आविष्कार हमारे लिए ही हैं। विज्ञान भी सत्य की खोज में है और सदा ही परिवर्तनशील है।

विज्ञान के क्षेत्र में इस परिवर्तन के बारे में कभी-कभी मैं सोचता हूँ कि बीसवीं सदी में कितनी नई-नई चीजों का आविष्कार हुआ जबकि प्रकृति और मनुष्यात्मा दोनों ही तमोप्रधान हैं। इसकी भेंट में सतयुग-त्रेतायुग का विज्ञान कितना समृद्ध होगा जो काल के गर्भ में समा गया।

इसलिए इस लेख में मैं उन सब बातों का वर्णन करूँगा जो हमारे सामने आई और प्राय: लोप हो गई। मिसाल के तौर पर सन् 1910 में अमेरिका में फोर्ड कंपनी की मोटर आई जिसका फोटो इस लेख के साथ दिया है। उसकी भेंट में 2010 में अर्थात् पिछले 100 वर्षों में कितना परिवर्तन हो गया है। आजकल की मोटरों का फोटो दिखाने की जरूरत नहीं है। इसी प्रकार हमारी ईश्वरीय सेवा और लौकिक दुनिया में काम में आने वाली कई चीजों में परिवर्तन हुआ है।

जुलाई 15, 2013 में भारत सरकार ने तार (Telegram) की सेवा बंद कर दी। सन् 1984 में जब जर्मनी गये थे तो वहाँ पर हमने देखा कि हर 4-5 मील के बाद एक मीनार बनी थी। हमें बताया गया कि पहले जमाने में हरेक मीनार में संदेशवाहक रहते थे। वे संदेश लेकर घोड़े पर बैठकर अगली मीनार तक जाते थे, इस प्रकार करीब 36 घंटों में जर्मनी से रोम तक संदेश पहुँच जाता था। ईश्वरीय सेवा में भी तार का बहुत योगदान रहा।

एक जमाना था जब मधुबन में एक ही टेलिफोन था, उसका नंबर था 23 और उस समय डायरेक्ट डायलिंग सिस्टम तो था नहीं इसलिए हमें टेलिफोन बुक करना पड़ता था। आज तो सभी भाई-बहनों के हाथों में मोबाइल है।

एक जमाना था मधुबन में बस स्टैंड से पांडव भवन तक सामान ले जाने के लिए बैलगाड़ी थी। उन दिनों हम लोग मधुबन जाते थे तो बस स्टैंड

1910 की अमेरिका की फोर्ड कंपनी की मोटर

उतरते थे, पांडव भवन से बैलगाड़ी आती थी, उस पर सामान चढ़ा देते थे। पिछले रास्ते से पांडव भवन पहुँचते थे। बैलगाड़ी के बाद मधुबन में पहला वाहन एक वैन खरीदी गई जिसे दादा आनन्द किशोर चलाते थे। ऐसे तो कराची में भी ब्रह्मा बाबा के पास वाहन थे। उस समय बृजेन्द्रा दादी बस चलाती थी। एक बार बस का एक्सीडेंट हो गया जिसमें राधा बहन को हाथ कटाना पड़ा। उस समय वह एक्सीडेंट अखबारों में आया कि भारत में एक महिला बस चलाती है। आज तो बहनें हवाई जहाज, रॉकेट आदि का संचालन करती हैं।

यज्ञ में शुरू के दिनों में ब्रह्मा बाबा कवि के रूप में, आने वाले नवविश्व के अनुभव के गीत लिखते थे और मातेश्वरी जी उन्हें लयबद्ध करके गाते थे जिनमें से दो प्रसिद्ध गीत हैं – ओम मंडली में जाकर हमने क्या देखा और

पाना था सो पा लिया...आदि। महात्मा गांधी के आश्रम का भजन 'चढ़ो रे मोहे आज अलौकिक रंग..' भी मातेश्वरी जी बड़े चाव से गाती थी।

यज्ञ में उस समय पर एक रिकॉर्डिंग मशीन भी थी, उसमें आनंदी बहन आदि के प्रवचन भी रिकॉर्ड हुए थे। वह रिकॉर्ड आबू में भी आया। हम उसे मुम्बई लेकर गये और रेडियोग्राम से उसे बजाते थे। मातेश्वरी जी जब हमारे घर पर आठ मास रहे तो उन्होंने उस पुराने रिकॉर्ड को खत्म करवा दिया। यज्ञ में बाद में ग्रामोफोन आया जिसमें उस समय पुरानी हिन्दी फिल्मों के गीत बजाते थे जो आज साकार मुरली में आते हैं। ब्रह्मा बाबा मुरली से पहले चंद्रहास दादा को कहते थे कि आज यह गीत बजाना। फिर बाबा की मुरली शुरू होती थी। उस जमाने में मुरली भी हाथ से लिखी जाती थी – हिंदी और सिंधी में। फिर एक लिथो मशीन होती थी, जिसके द्वारा मुरली की प्रतियाँ छपकर निकलती थी, फिर सब जगह भेजी जाती थी। मुरली चूंकि हाथ से लिखी जाती थी इसलिए कई बार अक्षर पढ़ने में नहीं आते थे।

जब विदेश सेवा शुरू हुई तो यहाँ से मुरली लंदन जाती, वहाँ उसका अंग्रेजी में अनुवाद होता फिर वहाँ से सब जगह भेजी जाती। इस कारण काफी देर से मुरलियाँ मिलती थी। भारत में भी प्रिंट होकर पोस्ट होने में 4-5 दिन लग जाते थे। इस प्रकार 10-12 दिन के बाद मुरली मिलती। आज तो हम सब अव्यक्त बापदादा की मुरली आई.टी. के साधनों द्वारा उसी समय पर देश-विदेश में सुनते हैं।

उस जमाने में टेपरिकॉर्डर भी नहीं था, इस कारण मुरलियाँ टेप भी नहीं होती थी। उन दिनों मुंबई वाटरलू मेन्शन सेन्टर पर आने वाले कुछ भाई पानी के जहाज से लंदन जाने वाले थे तो मैंने उन्हें कुछ डॉलर दिये और कहा कि आप लंदन जाकर मुरली दादा की माता सत्यभामा और जयन्ती बहन की माता रजनी से मिलना तथा वहाँ से कोई यादगार चीज लेकर आना। रजनी बहन ने उन्हें स्पूल वाला छोटा-सा टेपरिकॉर्डर दिया जिसके दोनों तरफ दस-दस मिनट की रिकॉर्डिंग हो सकती थी। ब्रह्मा बाबा जब वाटरलू मेन्शन सेन्टर पर आते थे तब हम उसी टेपरिकॉर्डर में 20 मिनट की मुरली रिकॉर्ड करते थे और शाम को सेन्टर आने वाले भाई-बहनों को सुनाते थे। ब्रह्मा बाबा को हमने टेप की मुरली सुनाई, बाबा ने कहा – यह तो मेरी आवाज है। मैंने कहा, बाबा, मैं रोज सुबह आपकी मुरली रिकॉर्ड करता हूँ और शाम को वही मुरली सुनाई जाती है। फिर बाबा ने दादी पुष्पशांता को कहा, ऐसा बड़ा टेपरिकॉर्डर बैंगलोर में टीकन दादी को संबंधियों से मिला था, उसे मंगा लो। फिर उसमें मुरली रिकॉर्ड की जाने लगी। जब ब्रह्मा बाबा आबू गये तो उसे साथ लेकर गये। उससे आबू में मुरली रिकॉर्ड की जाती और मुंबई में सुनाई जाती।

इस प्रकार टेपरिकॉर्डर से ईश्वरीय सेवा शुरू हुई और ब्रह्मा बाबा ने भी कहा कि सबसे श्रेष्ठ है डायरेक्ट सुनना, दूसरे नंबर पर है टेपरिकॉर्डर द्वारा सुनना, तीसरे नंबर पर है टीचर द्वारा सुनना और चौथे नंबर पर है घर पर ही पढ़ना।

बाद में तो स्पूल वाला टेपरिकॉर्डर भी प्राय: लोप हो गया और फ्लापी डिस्क का जमाना आया। बड़ी फ्लॉपी डिस्क में मुरलियाँ रिकॉर्ड करके भेजी जाती थी। बाद में छोटी फ्लॉपी डिस्क आई। बड़ी फ्लॉपी डिस्क गत्ते की होती थी, टेढ़ी-मेढ़ी होने के बाद काम में नहीं आती थी। छोटी फ्लॉपी डिस्क मजबूत होती थी और पोस्ट द्वारा भेजने में अच्छी रहती थी। बाद में कैसेट रिकॉर्डर से वीडियो कैसेट रिकॉर्डर (वी.सी.आर.) का आगमन हुआ। वी.सी.आर. की शुरूआत 1971 में हुई।

उस जमाने में कंप्यूटर भी नहीं थे और इस कारण कारोबार में अनेक प्रकार की समस्यायें आती थी। मैंने जब सी.ए.पास किया तो रशियन कंप्यूटर सिखाया गया। उसमें रिकॉर्ड

करने की 2 इंच की फिल्म होती थी। कंप्यूटर अलमारी जितना बड़ा होता था, बाद में बाजार में कंप्यूटर मिलने शुरू हुए। जब यज्ञ में इसकी आवश्यकता महसूस हुई तो मैंने दादी प्रकाशमणि जी से कंप्यूटर लेने के लिए पूछा तो दादी ने कहा कि यज्ञ में इतनी महंगी चीज का क्या करेंगे। तब मैंने दादी से कहा कि मुझे अपने ऑफिस के लिए खरीदना है तो दादी ने छुट्टी दी। भ्राता आनन्द जी जो वर्तमान में हमारे ऑडिटर हैं, उन्होंने कंप्यूटर में हिसाब-किताब लिखना सीख लिया था। पहली बार हमने ट्रस्ट का हिसाब-किताब कंप्यूटर में लिखा। फिर दादी को दिखाया कि कितना जल्दी होता है तब दादी ने कंप्यूटर खरीदने की छुट्टी दी। इस प्रकार से कंप्यूटर भी ईश्वरीय सेवा के काम में लग गया। आज तो कंप्यूटर, लैपटोप आदि रखना सामान्य-सी बात हो गई है।

बाबा के महावाक्य हैं कि साइंस के साधन ईश्वरीय सेवा के लिए ही बने हैं। उस जमाने में फैक्स मशीन भी नहीं थी, बाद में चीन ने इसकी शुरूआत की। मुम्बई में चीन से तीन फैक्स मशीनें मंगवाई गई। उनमें से एक मशीन आबू में रखी गई, दूसरी मुम्बई में तथा तीसरी अहमदाबाद में। आज तो फैक्स मशीन भी अप्रचलित हो गई है और ई-मेल द्वारा ही सब काम होने लगे हैं।

उस जमाने में रेडियो थे, ब्रह्मा बाबा के कमरे में उनके साथ हमने कई बार रेडियो से समाचार सुने हैं। आज तो रेडियो का जमाना भी चला गया है और टीवी पर न्यूज चैनल्स में 24 घंटे खबरें आती रहती हैं। एक जमाने में इंग्लैण्ड में बहुत बड़े ग्रंथ छपते थे जिन्हें कहते थे Encyclopedia. कोई भी जानकारी चाहिए, उनसे मिल जाती थी। सन् 1950 में Encyclopedia के 32 ग्रंथ छपे थे, उनका वजन 58 कि.ग्रा. था और ये ग्रंथ बहुत मूल्यवान समझे जाते थे। दुनिया की बड़ी-बड़ी लाइब्रेरी में इन्हें रखा जाता था। अभी तो इंटरनेट ब्राउजर्स जैसे गूगल आदि के द्वारा जो भी जानकारी प्राप्त करना चाहें, कर सकते हैं।

इसी तरह से कैमरे में फिल्म होती थी। फिल्म के द्वारा फोटो निकाली जाती थी। पहले उसका नेगेटिव बनता था, फिर धुलाई होकर पॉजिटिव बनता, फिर प्रिंट निकलता था। उस जमाने में Kodak, Fuji आदि कंपनियों द्वारा बनी फिल्म सारी दुनिया में मशहूर थी। परंतु बाद में डिजिटल कैमरे आ गये। Fuji कंपनी ने तो डिजिटल टैक्नोलोजी अपना ली परंतु कोडेक कंपनी ने डिजिटल के साथ-साथ फिल्म बनाने का कारोबार भी चालू रखा क्योंकि उनके कार्यकर्त्ताओं ने कहा कि अगर आप इसे बंद करेंगे तो हम तो भूखे मर जायेंगे। उन्होंने नई टेक्नोलॉजी जल्दी नहीं अपनाई जिस कारण वह कंपनी घाटे में चली गई। जबकि Fuji कंपनी के मालिक ने नई टेक्नोलॉजी जल्दी अपना ली जिस कारण उनकी आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी हो गई। यह सिद्ध करता है कि समय के साथ-साथ जो परिवर्तन होता है, उसे अपनाना चाहिए। उस जमाने में टाइपराइटर बहुत अधिक काम में आते थे, उसके कोर्स भी बने हुए थे। फिर साइक्लोस्टाइल मशीन द्वारा प्रिंट निकलती थी इसलिए ही दुनिया में दो नये प्रकार के वर्ग सेवाओं में आ गये – 1.टाइपिस्ट 2.स्टेनोग्राफर, जिनके द्वारा त्वरित गति से लिखने व टाइपिंग का कारोबार होता था। आज तो ना टाइपराइटर, ना साइक्लोस्टाइल की मशीन इतनी प्रचलित है। आज तो सबके पास कंप्यूटर और प्रिंटर आ गये हैं। हमारे विश्व विद्यालय में भी अव्यक्त बापदादा समय प्रति समय ईश्वरीय सेवा में नये-नये साधनों द्वारा सेवा करने का कारोबार कराते हैं। जो नये प्रकार की सेवा में अनुभवी बनते हैं, वे ही आगे जाते हैं, उनका ही नामाचार होता है।

इस लेख को लिखने का मुख्य आशय है कि समय के साथ तालमेल करके ईश्वरीय सेवा के कारोबार में नई चीजों का आविष्कार करके सेवा को आगे बढ़ाया जाये क्योंकि समय और साधनों का मूल्य हम ही जानते हैं। समय कम है और कम समय में ही हमें बाबा का संदेश सब तक पहुँचाना है।❖

जरा सोचो : क्या-क्या मिला है तुम्हें

● ब्रह्माकुमार सूर्य, मधुबन (आबू पर्वत)

किसी को घर बैठे भगवान मिल जाए...वो सर्वशक्तिवान किसी के घर में मेहमान बनकर आ जाए...स्वयं भाग्यविधाता राज्य-भाग्य लेकर सम्मुख खड़ा हो जाए... वह कितना भाग्यवान होगा...भगवान स्वयं सम्मुख बैठकर कहे, हे महान आत्मा, मैं तुम्हारा हूँ...मैं तुम्हारे लिए हूँ...मेरा सब कुछ तुम्हारा है...मैं सदा हजार भुजाओं सहित तुम्हारे साथ हूँ... तो क्या हो...!!! यही सब कुछ हुआ है ब्रह्मावत्सों के साथ। इस संसार में कई लाख महानात्माओं को भगवान मिल गये। वे जो स्वयं निराकार हैं, अजन्मे हैं, मुक्तिदाता हैं, परम सतगुरु हैं, वे मिल गये हैं और उन्होंने अपना वरदानी हाथ सिर पर रख दिया है। जिन्होंने उन्हें पाया है, उनकी जन्म-जन्म की भटकन समाप्त हो गई है।

भगवान त्रिकालदर्शी हैं, ज्ञान के सागर हैं, पतित-पावन हैं, परम शिक्षक हैं, वे हमारे परमपिता हैं, उन्हें हम अति-अति प्यार से कहते हैं, मेरे बाबा। यहाँ हम उनके लिए बाबा शब्द का ही प्रयोग करेंगे।

कइयों को शायद लगे कि ये ब्रह्माकुमार, कुमारियाँ बड़ी-बड़ी बातें करते हैं। भला कहीं ऐसा होता है क्या? भगवान इतने सस्ते हैं क्या जो यूँ ही मिल जायेंगे। वे विद्वानों को नहीं मिले, वे ऋषि-मुनियों को नहीं मिले, वे भला इन्हें क्या मिलेंगे! परन्तु यही सत्य है, लाखों बुद्धिमान लोग, शिक्षित वर्ग, पवित्र आत्माएँ व श्रेष्ठ योगी इस सत्य के साक्षी हैं, भगवान स्वयं साकार तन में आकर उन पुण्यात्माओं से मिलन मना रहे हैं जो सतयुग में देवात्माएँ थीं। वे परमपिता हैं, हमें उनसे मिलने का अधिकार है।

शिव बाबा जो ज्ञान के सागर हैं, सर्वप्रथम उन्होंने परमशिक्षक बनकर हमें सत्य ज्ञान दिया। उन्हें ज्ञान-दाता कहते हैं तो क्या वे ज्ञान नहीं देंगे! केवल दर्शन देकर ही चले जायेंगे!! भगवान हमारे सम्मुख आयें, दर्शन देकर चले जाएँ, क्या इसे मिलन कहेंगे? भगवान हमारे सम्मुख आये और हमारे हो गये। उन्होंने हमें सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का, आत्मा व परमात्मा का, मुक्ति व जीवनमुक्ति का, माया का व राजयोग का ज्ञान दिया। उनके द्वारा दिये गये ज्ञान को पाकर हमारी जन्म-जन्म की खोज समाप्त हो गई। वेद-शास्त्र पढ़कर हमारी सत्य की खोज समाप्त नहीं हुई थी। अब तो उन्होंने हमारी झोली ज्ञान-रत्नों से भर दी है।

सोचो, हमने भगवान को गीता ज्ञान सुनाते देखा... उन्होंने हमें न केवल ज्ञान दिया बल्कि ज्ञान की हर बात को स्वयं दृष्टि देकर अनुभव कराया। हमने उन्हें आत्माओं को प्यार देकर जन्म-जन्म के दुखों से मुक्त करते देखा। उनसे अपनापन पाया, उन्हें अपना साथी बना लिया। वे स्वयं हमारे खुदा दोस्त बन गये। उन पर हमारा अधिकार हो गया। हम उनके अति समीप आ गये। हमें हमारी जन्म-जन्म की भक्ति का फल मिल गया। हमने कभी सोचा भी नहीं था कि हम भगवान को अपना कहेंगे, हम उनके इतने समीप आ जायेंगे।

कितना बड़ा अधिकार उन्होंने हमें दे दिया । जरा उनके ही शब्दों पर ध्यान दें , ''बच्चे बुलायें और बाप न आयें, ये हो नहीं सकता।'' सोचो, उन्होंने क्या कहा, ''कोई भी समस्या हो, दिल से याद करो, 'मेरा बाबा' और बाबा तुरन्त हाजिर हो जाएगा''। क्या आपको इस अधिकार का एहसास है? क्या आपने उसे अपने प्यार व अधिकार की रस्सी में नहीं बाँधा है?

वे हमारे लिए स्वर्ग साथ में लाये हैं। वे खाली हाथ नहीं आये। ताज व तिलक लेकर आये हैं और हमें ज्ञान दे दिया कि तुम अनेक जन्मों के लिए स्वर्ग की बादशाही कैसे प्राप्त करो। सोचो ज़रा, उन्होंने हमारा सोया हुआ भाग्य जगा दिया है...हमारे भाग्य ने करवट बदली है...हमारे भाग्य का सितारा विश्व गगन में चमक रहा है ।

तीन युगों तक हम श्रेष्ठ भाग्य के धनी रहेंगे। भाग्य परछाई की तरह हमारे साथ-साथ चलेगा। हमें कभी भी, किसी भी बात की कमी नहीं होगी। इतना ही नहीं, उन्होंने हमें मास्टर भाग्य विधाता भी बना दिया। क्या अपने श्रेष्ठ भाग्य को देखकर आप प्रफुल्लित नहीं होते?

अनेक मनुष्यों का जीवन दु:ख, अशान्ति की अग्नि में जल रहा था। कितने ही लोग तनाव में रातें काट रहे थे, नींद के सुख से भी वंचित थे। बाबा ने आकर जीवन की राहों पर खुशियों के पुष्प बिखेर दिये। अनेक मनुष्यों ने आत्म-तृप्ति पाई। कितनों का जीवन खुशनुमा हो गया। कितने लोग व्यसनों के शिकार होकर आसुरी जीवन जी रहे थे। वे सुरापान त्याग अब अमृतपान करने लगे।

मानव जीवन पाप की राहों पर अन्धकार के गर्त में डूबता जा रहा था। पाप-पुण्य का ज्ञान दिया, उन्हें पापों से मुक्ति दिलाई और किये गये पाप-कर्मों के प्रायश्चित की यथार्थ विधि बताई। बदले की अग्नि में जीने वाले अनेक मनुष्यों के चित्त को बाबा ने आकर शान्त किया क्षमाभाव सिखाकर। कितने मनुष्य इस उपलब्धि हेतु सच्चे मन से बाबा का शुक्रिया करते हैं।

भक्ति में हम बोलबाला सर्वशक्तिवान कहकर उनकी महिमा गाते थे, परन्तु अब हमने उनके सर्वशक्तिवान स्वरूप को देखा। उनकी शक्तियाँ सभी मनुष्यात्माओं के विकर्म नष्ट करने के लिए हैं। उन्होंने स्वयं अपने वत्सों को अपनी शक्तियाँ प्रदान करके कहा, प्यारे बच्चो, अब तुम हो गये मास्टर सर्वशक्तिवान व विजयी रत्न। अब इन शक्तियों का प्रयोग करो और इस महाशक्तिशाली माया पर विजय प्राप्त करो। इन शक्तियों को पाकर हम काम, क्रोध आदि विकारों से मुक्त हुए। जीवन में पवित्रता का प्रकाश आया और हम चल पड़े राजयोग के सफल व सरल मार्ग पर। ये कोई साधारण प्राप्ति नहीं।

सोचो, स्वयं भगवान ने हमें राजयोग की गुह्य विद्या प्रदान की। इस योग के बल से हम परमात्म-शक्तियों को, उनकी परम शान्ति को व पवित्रता के बल को प्राप्त करने लगे और इन शक्तियों के द्वारा जन्म-जन्म के विकर्म नष्ट होने लगे। परिणामस्वरूप हम कर्मातीत व मुक्त अवस्था की ओर आगे बढ़ने लगे।

जरा सोचो, तुमने भगवान को परम सतगुरु के रूप में भी पाया। इस स्वरूप से उन्होंने तुम्हारी झोली अनेक वरदानों से भर दी। इस धरा पर अनेक योगी ईश्वरीय वरदानों से भरपूर हो गये और इनका प्रयोग विश्व कल्याण के कार्य में करने लगे। अनेकों के सिर पर उनका वरदानी हाथ आ गया।

हमने भगवान को खुदा दोस्त के रूप में भी पाया। कुछ ब्रह्मावत्सों ने उन्हें अपना सच्चा मित्र बना लिया। खुदा दोस्त बनकर सच्ची मित्रता निभा रहे हैं। जीवन साथी बन वे हमारी सुरक्षा भी कर रहे हैं, वे अपने प्यारे साथियों के सिर पर छत्रछाया बनकर रहते हैं। महसूस करें आप अपनी इस चमत्कारिक प्राप्ति को।

कइयों का जीवन रोते-रोते, लक्ष्यविहीन, उमंगों से रहित व हिम्मत से रिक्त चल रहा था। बाबा ने आकर जीवनदान दिया है। माया व समस्याओं से मूर्च्छित मनुष्यों को फिर से सुरजीत किया है। हे देवकुल के शृंगार आत्माओ, ज़रा अपने भाग्य को देखकर गुनगुनाओ। तुम परमात्म पालना में पल रहे हो। लोग तो उठते ही समस्या व चुनौतियों से रूबरू होते हैं परन्तु आँख खुलते ही तुम्हारा तो प्रभु-मिलन होता है। तुम्हारे दिन की शुरूआत ही मुसकान के साथ, प्रभु-मिलन के साथ होती है। क्या तुमने कभी सोचा था कि स्वयं भगवान तुम्हें गीता ज्ञान देने आयेंगे। तुम्हें तो खिलाता भी वही है और माँ बनकर प्यार की लोरी देकर, मन के सारे बोझ हरकर सुलाने भी रोज़ आ जाता है। सोचो, क्या ऐसी प्रभु पालना अन्य किसी के भाग्य में है! वह हर समय तुम्हें मदद देने को तैयार रहता है।

कितने लोग जीवन में अकेले थे। उन्हें इस संसार में कहीं भी प्रकाश दिखाई नहीं देता था। वे यही सोचकर

दुखी थे कि जीवन की यात्रा कैसे तय होगी। परन्तु जब भगवान स्वयं जीवन साथी रूप में मिल गये तो वे धन्य-धन्य हो गये। उनके सुखों की सीमा नहीं है, उनके कदम अब धरती पर नहीं पड़ते। वे अकेले थे, अब बाबा ही उनका संसार हो गया।

भगवान स्वयं लाखों के जीवन में आये, उनके लिए सहारा बनकर। बेसहारे थे वे सब। अन्धकार था उनकी राहों पर, काँटे बिछाये थे उनके लिए उनके अपनों ने। बाबा ने आकर उनके काँटों को फूलों की शैय्या बना दिया।

बाबा ने आकर नारी को शिव-शक्ति बनाया। उसके आँसू पोंछे और प्यार व सम्मान दिया। जो सिर छुपाकर जीती थी, उसे ललकारना सिखाया। नारी के सिर पर ज्ञान का कलश रखकर उसे सरस्वती सम ज्ञान की देवी बना दिया। विकारों पर विकराल रूप बनाकर महाकाली सम बना दिया।

अनेक निर्धनों को जागृत किया, उन्हें इस एहसास से मुक्त किया कि वे गरीब हैं। उनमें उमंग भरा, तुम यदि दीन हो तो मैं दीन-बन्धु हूँ। तुम्हारे पास यदि धन-दौलत नहीं तो कोई बात नहीं, मेरे सारे खजाने तुम्हारे हैं। तुम चिन्ता न करो, तुम कभी भी भूखे नहीं रहोगे। और सत्य तो यह है कि बाबा ने उनका अल्प धन स्वीकार करके यहीं उन्हें धन-सम्पन्न भी कर दिया और हिदायत भी दी कि इस धन से पुण्य ही करना।

भगवान तो मिले ही परन्तु उन्होंने हमें स्मृतियाँ दिलाकर हमारे सोये हुए स्वमान को भी जगा दिया। हम अपने को माया में लिप्त दीन-हीन तुच्छ मानते थे परन्तु उन्होंने आकर हमें याद दिलाया, नहीं बच्चे, तुम तो देवकुल की महान आत्मा हो। तुम तो मेरे हो और मैं तुम्हारा हूँ। बच्चे, तुम निर्बल नहीं हो, मास्टर सर्वशक्तिवान हो। तुम अपनी शक्तियों को पहचानो... तुममें अनन्त शक्तियाँ विद्यमान हैं... तुम समस्याओं से अधिक बलवान हो...तुम ही महावीर हो, तुम ही विघ्न विनाशक गणेश हो... तुम ही वे इष्ट देवियाँ हो जिनकी मन्दिरों में आराधना हो रही है... तुम ही विजयमाला के वे मणके हो जिनके स्मरण से भक्त भी समस्याओं से मुक्त हो रहे हैं। सोचो, अपनी इन प्राप्तियों को। उन्होंने हमें माँगने वाले नहीं, प्रार्थना करने वाले नहीं बल्कि देने वाले बना दिया, हमारी सुषुप्त शक्तियों को जगा दिया।

बाबा ने आकर हमें पवित्रता का खज़ाना दिया, खुशियों की दौलत दी। मनुष्य तो दौलत इकट्ठी करते हैं खुशी के लिए परन्तु बाबा ने हमें एहसास कराया कि खुशी ही सबसे बड़ी दौलत है। अनेकों के जीवन में खुशियों के चमन खिल गये, अनेकों के चेहरे चमकने लगे। अपने सभी खजानों का बाबा ने हमें मालिक बना दिया। महसूस करें व स्वीकार करें अपनी इस अनुपम प्राप्ति को।

बाबा ने पवित्रता हमें तपस्या के रूप में नहीं दी, खजाने के रूप में दी। इसे पाकर हमारा जीवन आनन्द से भर गया। इससे हममें प्रकृति के मालिक बनने का बल आ गया। बाबा ने प्रतिदिन ज्ञान मुरली सुनाकर हमारे मन-मयूर को नृत्य कराया। मुरली सर्वश्रेष्ठ वरदान, अमूल्य खजाना, अनमोल निधि व सभी समस्याओं का निराकरण करने वाली शक्ति है।

प्रतिदिन सवेरे आँख खोलते ही अपनी प्राप्तियों को याद करें कि इस अन्तिम पवित्र ब्राह्मण जीवन में हमने क्या-क्या देखा, क्या-क्या पाया। व्यक्तिगत रूप से मुझे क्या-क्या मिला। दिव्य बुद्धि मिली, संकल्प शक्ति का ज्ञान मिला, बाबा ने हमें स्वदर्शन चक्रधारी बना दिया, जाति-पाति से ऊपर उठाकर अध्यात्म की शक्ति से सम्पन्न कर दिया। हमारे विचार बदल दिये, बोल बदल दिए, संस्कार व आहार-विहार, आचरण बदल दिया। सच कहें तो उन्होंने हमें बोलना सिखा दिया। ऐसे महान भाग्य के धनी हैं हम जिन्हें भगवान ने अपने दिल में स्थान दिया और अपने समान बनने के तख्त पर बैठा दिया। उन्हें याद करते रहना व प्रभु प्रेम में मग्न हो जाना। ❖

प्रभु मिलन की प्यास

● ब्रह्माकुमारी सीता, राउरकेला

मेरा जन्म एक धार्मिक परिवार में हुआ और मैंने भगवान को पाने के लिए छह गुरु किये। एक दिन एक गुरुजी ने प्रवचन में सुनाया कि भगवान को पाने के लिए पाँच विकार छोड़ने पड़ते हैं। उन्होंने ओमशान्ति मंत्र दिया। मैंने इस मंत्र की रटन लगा दी। श्वासों-श्वास रटन चलती थी। नींद में भी चलती थी। फिर भी प्रभु मिलन की मुराद पूरी नहीं हुई। मैंने मंदिर जाना छोड़ दिया। अब मैं क्या करूँ? कभी रसोई बंद कर लेती, कभी कमरा बंद कर लेती और रोते हुए पूछती, कहाँ है, तू कहाँ है? आखिर तू छिपेगा कहाँ? मैंने सुना है, तू भक्तों से छिप नहीं सकता। फिर ख्याल आता, कोई देख लेगा तो कहेगा, क्यों रो रही है? कभी रात्रि में आंगन में सोये-सोये चंद्रमा से बातें करती, मेरे बीर, तू तो जानता होगा, जाकर उस परमात्मा बाप से कह कि बेटी को ससुराल भेजकर बाप याद नहीं करता क्या?

कभी मई के महीने में दिन के दो बजे सड़क पर निकल जाती और चारों तरफ देखती, भगवान कहीं नज़र नहीं आता। फिर ख्याल आता, कोई देख लेगा तो कहेगा, इस उम्र की बहू यहाँ क्यों खड़ी है? कभी चक्की पीसती हुई रोने लगती। बच्चे पूछते, माँ, तुम क्यों रो रही हो? मैं झट आँसू पोंछ लेती, अपना विरह किसको कहती। इसी तरह कुछ दिन बीत गये।

भीलनी की तरह बाट निहारती रही

एक अमृतवेले के समय मैं नींद में थी, दिखाई दिया कि श्रीकृष्ण जी दीवार के पास खड़े हैं और मुझे अपनी तरफ खींच रहे हैं। मैंने उठकर श्रीकृष्ण जी को प्रणाम किया और पूछा, श्रीकृष्ण जी, श्रीविष्णु जी कहाँ हैं? श्रीकृष्ण जी ने कहा, वो देखो मेरे पीछे खड़े हैं। फिर श्रीकृष्ण जी जाने लगे। मैंने पूछा, फिर कब मिलोगे? वे बोले, छह वर्ष बाद मिलूँगा। कुछ दिन बाद मैं बहुत बीमार रहने लगी। लेकिन मैं जानती थी कि मैं मरने वाली नहीं हूँ क्योंकि मनुष्य झूठ बोल सकता है, भगवान नहीं। उन्होंने मुझे कहा है कि छह वर्ष के बाद फिर मिलूँगा। मैं भीलनी की तरह बाट निहारती रही।

हाथ तभी छोड़ूँगी जब भगवान से मिला दोगे

आखिर वह दिन आया जिसका मुझे इंतजार था। सफेद साड़ी पहने तीन बहनें महिला मंडल में आईं और मुझे बुलाया गया। मैं कुछ देर में पहुँची, सत्संग पूरा हो चुका था। आखिर में बहनें एक सीढ़ी का चित्र समझा रही थीं और कह रही थी, अब ये चार युग पूरे हुए, अब फिर से सृष्टि पर भगवान आ गये हैं। मैंने पूछा, बहनजी, आपने जो चित्र अभी दिखाया कि भगवान पृथ्वी पर आ गये हैं, क्या यह सत्य है? उन्होंने कहा, हाँ, भगवान आ गये हैं। मैंने पूछा, कहाँ पर? उन्होंने कहा, माउंट आबू में। मैंने कहा, क्या वे मुझे मिल सकते हैं? उन्होंने कहा, अरे, क्यों नहीं, वे तो आये ही हैं माताओं के लिए। मैंने कहा, बहनजी, क्या आप हमें भगवान से मिला दोगे? उन्होंने कहा, ज़रूर। मैंने सोचा, वाह, आज तक तो ऐसी गारन्टी लेने वाला कोई नहीं मिला। मैंने उनका हाथ पकड़ लिया और कहा, बहनजी, अब मैं आपका हाथ तभी छोड़ूँगी जब आप मुझे भगवान से मिला दोगे। उन्होंने कहा, क्यों नहीं, ज़रूर मिलवाएँगे।

जन्मों की आश पूरी हुई

बहनें एक दिन के लिए आई थीं। मैंने और एक दिन रोक लिया और सारी जानकारी ले ली। उन्होंने सांत्वना देते हुए कहा, आप घबराओ नहीं, हम आपके लिए कुछ किताबें भेजेंगे, आप पढ़ना, आपको भगवान की सब बातें समझ में आ जायेंगी। उन्होंने चार किताबें भेजीं और मैंने थोड़े ही समय में सब पढ़ डालीं। पढ़ते-पढ़ते सब बातों पर पूरा विश्वास हो गया और मैं प्यारे बाबा के पास मधुबन जाने के लिए तड़पने लगी।

बहनजी ने कहा, इसके लिए कुछ नियम हैं। मैंने कहा, बहनजी, मैं पूरे नियमों पर हूँ। फिर बहनों के साथ मैं मधुबन पहुँच गई। उन दिनों बाबा एक-एक आत्मा से मिला करते थे। जब बाबा से मिलने का मेरा नंबर आया तो बाबा ने वरदान दिया, शक्ति हो ना! मैंने कहा, हाँ बाबा। फिर कहा, खुशनसीब हो ना! मैंने कहा, जी बाबा। बाबा ने टोली हाथ में देकर मेरा हाथ कसकर पकड़ लिया। उस समय मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। घर पहुँचने के बाद परीक्षायें आईं। **निश्चय में दृढ़ता होने के कारण माया से लड़ने में मज़ा आता रहा और विजयी होती रही।** अभी मैं परिवार सहित ज्ञान में चल रही हूँ और मेरी चार सुपुत्रियाँ भी समर्पित रूप से यज्ञ में सेवायें दे रही हैं। प्यारे बाबा का लाख-लाख शुक्रिया! मेरे मीठे बाबा, आपने मेरी जन्मों की आश पूरी की।❖

दुख को सुख में बदलें

ब्रह्माकुमार रामकुमार, रेवाड़ी

जब तक ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त नहीं हो जाता, मनुष्य परिस्थिति आने पर दुख महसूस करता है। किसी बात से या व्यक्ति से सीधा और समीप का सम्बन्ध न होने पर भी सांसारिक घटनाओं को देखकर दुख महसूस करने लगता है। इससे सिद्ध होता है कि आत्मा सुख स्वरूप है, सुख देखना, सुनना चाहती है, दुख उसे अच्छा नहीं लगता। लेकिन, दुख को देखकर दुखी होना तो दुख को बढ़ाना है। आँसुओं के समुद्र में अपने कुछ और आँसू डाल देने से कुछ समाधान होने वाला नहीं है। अत: दुख की घटनाओं से दुखी होने की बजाय, दुख को सुख में बदलने की कला का प्रयोग करें।

जैसे उत्तराखण्ड में आई प्राकृतिक विपत्ति की खबरें सुनकर हम दुखी हुए परन्तु इससे तो हमने दुख को बढ़ा दिया। दुख को देखकर होना तो यह चाहिए कि हम भगवान को कहें कि वे इनके दुख को समाप्त करें। दुखी होने की बजाय सुख के प्रकम्पन भेजें। हम लाखों, करोड़ों आत्माएँ जब उनके सुखी होने या उनके दुख दूर होने की कामना के प्रकम्पन फैलाएंगे तो आँसुओं का सागर अवश्य सूखेगा।

शरीर को मैं और मेरा मानना ही सम्पूर्ण दुखों का कारण है। सुनना चाहते हैं इसलिए ना सुनने का दुख होता है, देखना चाहते हैं इसलिए न दिखने का दुख होता है। बल चाहते हैं इसलिए निर्बलता का दुख होता है, जवानी चाहते हैं इसलिए बुढ़ापे का दुख होता है। कहने का भाव यह है कि वस्तु के अभाव से दुख नहीं होता है लेकिन उसकी चाहना करने से या उसके अभाव का अनुभव करने से दु:ख होता है। इससे बचने का बाबा ने सरल तरीका बताया है कि बच्चे, जो इन आँखों से देख रहे हो वह सब परिवर्तनशील है, कुछ भी स्थाई नहीं है। सदा रहने वाले मुझ परमात्मा को याद करो तो दुखों से छूट सकते हो।

असार संसार से मन का सम्बन्ध जोड़ेंगे तो दु:खों का अन्त नहीं और परमात्मा पिता से सम्बन्ध जोड़ेंगे तो सुखों का अन्त नहीं। सुख पाना चाहते हैं तो दूसरों को सुख दें। दुखदाई परिस्थिति हमारे कल्याण के लिए आती है इसलिए उसे शान्तिपूर्वक सह लें। कई कहते हैं कि दुखों से भरा संसार परमात्मा ने बनाया ही क्यों? मनुष्य को जल की प्यास दुख देती है, जल नहीं। इसी प्रकार संसार की आसक्ति दुख देती है, संसार नहीं। अत: अनासक्त रहना सीखें। ❖

सहना, सोने का गहना

● ब्रह्माकुमारी उर्मिला, शान्तिवन

कई लोग यह सवाल उठाते हैं कि सहन करने वाले को तथा बुरे के साथ बुरा ना बनने वाले को दब्बू और चुप रहने वाले को कसूरवार समझ लिया जाता है, ऐसे में क्या करें?

चुप रहकर दिशा बदलने में भलाई

हम सबने बहते हुए पानी को देखा है। उसके रास्ते में यदि चट्टान खड़ी हो तो वह कभी भी उसके साथ संघर्ष करने में समय खराब नहीं करता। पानी के सामने उद्देश्य है बहते जाने का। उसे कइयों की प्यास बुझानी है और धरती को हरा-भरा करना है। इसलिए वह दो हिस्सों में बंटकर चट्टान के दोनों तरफ से पार हो जाता है और आगे जाकर पुन: एक हो जाता है। पानी ने चट्टान के साथ टक्करबाजी नहीं की, इसका अर्थ यह नहीं है कि वह कमज़ोर है या दब्बू है या कसूरवार है। पानी तो बड़ी-बड़ी चट्टानों को चूरे में बदल देता है, अपने साथ बहाकर उनके अहंकार रूपी कोनों को झाड़कर उन्हें चिकना बना देता है फिर लोग उन्हें सालिग्राम के रूप में पूजते भी हैं। परन्तु वह जानता है, अपनी इस शक्ति का कब-कब, कहाँ-कहाँ और कितना प्रयोग करना है। वह यह भी जानता है कि चट्टान का तो कोई जीवन-लक्ष्य है ही नहीं, उसका तो एक ही काम है, सबके मार्ग में अवरोध बन कर खड़े होना। जिसका उद्देश्य ही अवरोध बनना है, उससे संघर्ष करके शक्ति को व्यर्थ करने से क्या फायदा? थोड़ा बहुत संघर्ष (पुरुषार्थ) वहाँ तो उचित है जहाँ सामने वाले के (संस्कार) बदलने की उम्मीद हो। पर जहाँ लगता है, वर्षों संघर्ष के बाद भी उसे वैसे ही रहना है तो चुप रहकर दिशा बदल लेने में ही भलाई है। उस ढीठ चट्टान के साथ ढीठ बनने पर तो पानी अपना गुण भी खो देगा, चट्टान का क्या बिगड़ेगा? इसलिए बुरे के साथ बुरे बनने में अपनी अच्छाई का नाश क्यों करें। चुप रहकर अपनी शक्तियों और गुणों को बचाना हार नहीं वरन् जीत है। जो इतनी गहरी बात नहीं समझते उन्हें चुप्पी हार लगती है पर वास्तव में यह है सदाकाल की जीत।

कब तक सहन करूँ?

कई बार मनुष्य के मुख से निकलता है कि कब तक सहन करूँ, कितना सहन करूँ? परन्तु सहन करने की कोई सीमा निर्धारित नहीं है। जब तक जीना है, तब तक सहना है। क्या कोई कह सकता है कब तक सर्दी को सहन करूँ, गर्मी को सहन करूँ। जब तक जीना है तब तक मौसम अनुसार सर्दी, गर्मी को सहन करना ही है। क्या कभी ऐसा प्रश्न उठ सकता है, कब तक श्वास लेना है, कब तक भोजन खाना है? नहीं ना। तो फिर यह प्रश्न क्यों, कब तक सहना है। सहन करने से शक्ति बढ़ती है। जब तक जीना है तब तक इस शक्ति को अपने में भरते रहना है।

क्या-क्या सहन करूँ?

कई कहते हैं, क्या-क्या सहन करूँ, किस-किस को सहन करूँ। हमारे चारों ओर भिन्न-भिन्न मानव और पदार्थ हैं। परिवर्तनशील जगत में इनका भी रूप परिवर्तित होता रहता है। हम इनके साथ रहते हैं तो इनमें आए हर परिवर्तन को स्वीकार करना ही है। शरीर भी परिवर्तन के दौर से गुज़रता है। कभी बीमारी है, कभी वृद्धावस्था है, प्रकृति के स्वाभाविक परिवर्तन को स्वीकार करने में ही आनन्द है।

सहनशीलता को भी सम्भालें

मानव सोने के बहुमूल्य गहने पहनता है तो सौन्दर्य में चार चाँद लग जाते हैं। आज के समय में इन गहनों की सम्भाल भी बहुत चाहिए कि ये अपनी जगह स्थिर हैं, स्थान से हट तो नहीं गए। चाहे छोटा-सा गहना (बैज) ही क्यों न हो, बहुत कीमती होता है। जैसे गहने हमारे सौन्दर्य को बढ़ाते हैं, इसी प्रकार सहनशीलता भी एक अति सुन्दर गहना है जिसको धारण करने से अन्य गुण रूपी गहने भी सहज धारण हो जाते हैं। अत: गहनों की

तरह बार-बार सहनशीलता को भी सम्भालें, मेरे पास है, साथ है, कहीं मुझसे छूट तो नहीं गई? सामने आकर उपस्थित होने वाली हर चाही-अनचाही पर आवश्यक बात का फायदा उठाकर आगे बढ़ने का नाम सहनशीलता है।

नम्रचित्त को कुछ भी सहने जैसा लगता ही नहीं

जायज़ बातों को सहन करके उनसे फायदा लेकर आगे बढ़ने में आमतौर पर व्यक्ति का अहम् आड़े आता है, जो फिर क्रोध को जन्म देता है। ऐसी परिस्थिति में नम्रता का कवच जरूरी है। नम्रचित्त को तो कोई बात सहने जैसी कठोर लगती ही नहीं। लचीला होने के कारण वह नम्र व्यक्ति किधर से भी आगे बढ़ने का मार्ग निकाल लेता है। इसलिए गुरुनानक देव जी ने कहा है,

नानक नन्हें होय रहो,
जैसे नन्हीं दूब।
बड़े पेड़ गिर जाएंगे,
दूब खूब की खूब।।

मनुष्य को दूब की तरह नन्हा होकर रहना चाहिए। बाग की दूब पर सैकड़ों लोग रोज चलते हैं फिर भी हरी-भरी रहती है, वृद्धि को पाती रहती है और बड़ा पेड़ आंधी के एक झोंके में धराशायी हो जाता है। इस संबंध में कबीरदास जी ने कहा है,

सबते लघुता भली,
लघुता ते सब होय।
जस दुतिया को चन्द्रमा,
सीस नावै सब कोय।।

भावार्थ है कि दूज के चन्द्रमा में बहुत हलका प्रकाश होता है, फिर भी श्रद्धावान लोग उसके दर्शन करके, उसे शीश नवाने में पुण्य की प्राप्ति मानते हैं।

कबीर नवै सो आपको,
पर को नवै न कोय।
घालि तराजू तौलिए,
नवै सो भारी होय।

भावार्थ है कि तराजू का जो पलड़ा झुकता है वही वजनदार माना जाता है। वास्तव में जिसमें गुरुता होती है वह झुकता है और झुककर अपना मूल्य बढ़ा लेता है।

ज़रूरी है सहनशीलता रूपी रगड़

मैले कपड़े को हम रगड़ते हैं, वह रगड़ सहन करता है, जितना ज्यादा मैला, उतनी ज्यादा रगड़। पर कपड़े को खुशी है, मेरा मैल निकल जाएगा। इसी प्रकार हम आत्माओं को अपना मैल निकालने के लिए, सहनशीलता रूपी रगड़ चाहिए। कई बार रगड़ कष्टकारक लगती है पर खुशी है कि इस रगड़ से उजले बनेंगे। फोड़े का मवाद निकालने में सहना पड़ता है। अहंकार रूपी फोड़े की मवाद निकालने के लिए सहना ज़रूरी है। सहने से अनुभवी बन जाते हैं और नम्रता आ जाती है।

उलटे बोर्ड पर सबकी नजर

कई बार ऐसा होता है कि किसी ने बुराई की, सहन नहीं हुई, मन में आया कि मेरी छवि धूमिल कर दी। पर उलटे बोर्ड पर सबकी नज़र जाती है, सीधे को शायद कोई ना भी देखे। यदि हमारी महिमा होती, तो कोई नहीं देखता पर ग्लानि (झूठी) हो रही है तो उलटे बोर्ड की तरह सब जान लेंगे और झूठ तो बिना पैरों का है, वो कितना चलेगा, गिरेगा, फिर सच्ची महिमा भी उतनी ही ज्यादा होगी। बस, इतना करें कि हम दिलशिकस्त ना हों, सत्य पर अडिग रहें, धैर्य रखें। ❖

नाक-कान-गले की बीमारियाँ...**पृष्ठ 34 का शेष**

सुविधायें उपलब्ध हैं। साइनस की पुरानी बीमारी का भी यहाँ बिना चीर-फाड़ के दूरबीन द्वारा इलाज किया जाता है। बच्चों के जन्मजात कटे होंठ व तालू की शल्य चिकित्सा स्माइल ट्रेन के सहयोग से नि:शुल्क की जाती है। डा.मेहता राजस्थान, गुजरात और मध्यप्रदेश के दूरस्थ ग्रामीण इलाकों में कैम्प लगाकर जागरूक करने के साथ-साथ मरीजों को ग्लोबल में लाकर सर्जरी करते हैं। नाक-कान-गला तथा हेड-नेक सर्जरी से सम्बन्धित सभी जानकारियों के लिए डा.शरद मेहता से 09414398431 पर सम्पर्क किया जा सकता है। ❖

बिना शर्त स्वीकारा परमात्मा ने

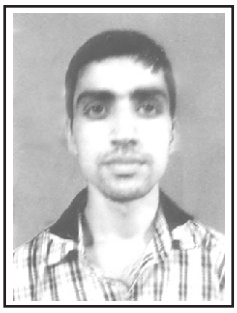

● ब्रह्माकुमार पंकज, देहरा (हि.प्र.)

मैं बचपन से ही परमात्मा के प्रति बहुत आस्थावान था और समय के साथ यह आस्था बढ़ती गई। टी.वी. में जब ध्रुव और प्रह्लाद के चरित्र देखता था तो बहुत अच्छा लगता था। कथाओं में जब परमात्मा और उसके भक्तों के बारे में सुनता था तो भावविभोर हो जाता था। मैं चाहता था कि मुझे परमात्मा के दर्शन हो जाएँ। परमात्म प्राप्ति के लिए सत्संग, आरती, जप, व्रत आदि करता रहता था। इससे मुझे बहुत अच्छे-अच्छे अनुभव भी हुए परंतु मन में कुछ ऐसे प्रश्न उठते थे जिनका उत्तर नहीं मिलता था। भक्ति करते हुए भी भक्ति की क्रियाओं का स्पष्टीकरण मेरे पास नहीं था। मैं सोचता था कि यह श्रीकृष्ण (असल में देवता) भगवान या अन्य कोई भी भगवान अपने आप में कैसे बन गया। क्या कोई भी ऐसे बन सकता है? फिर सोचता था, भगवान के पास जो शक्तियाँ हैं काश! वो हमारे पास भी होती!

परेशानियों का सिलसिला

जैसे-जैसे समय बीतने लगा, शरीर के साथ लगाव बढ़ने लगा। शैक्षणिक उपलब्धियों के कारण अहंकार बढ़ने लगा। अधिक से अधिक प्राप्त करने की होड़ में शामिल होने लगा। एक विद्यार्थी के तौर पर अपने रोल को ही 'मैं' समझने के कारण मैं ज्यादा से ज्यादा अंक पाने के तनाव में रहने लगा। कुछ मानसिक समस्याएं मैंने खुद बना ली थीं। मैं काल्पनिक दुनिया में ही रहता था परन्तु संकल्पों की गुणवत्ता अच्छी नहीं थी जिसके गलत परिणाम सामने आए। मेरे मन में सदा यही डर रहता था कि दूसरा क्या सोचेगा, क्या बोलेगा। शरीर को ही 'मैं ' समझने के कारण शरीर की सुंदरता के बारे में ही सोचता रहता था। भूतकाल का चिन्तन करता रहता था। मुझे काम विकार ने भी बहुत बार गिराया तथा अन्य लड़कों के प्रति मेरी गलत सोच थी जिसे महसूस नहीं कर पाया था। अज्ञान के कारण मैं गलतियाँ करता रहा। मुझे सब में कमियाँ निकालने की आदत पड़ गई। दिलशिकस्त होना, उदास रहना यह तो जैसे मेरा भाग्य बन गया था। सदा अपने आपको कोसता रहता था। फिर अवसाद में रहने लगा था। मन में आत्महत्या के विचार आने लगे। फिर सोचता था कि यह तो पाप है, घर वालों को दु:ख होगा और सबसे बड़ी बात, मुझे तकलीफ होगी। मेरा शरीर भी अस्वस्थ रहने लगा। साइनोसाइटिस की परेशानी के साथ मुझे साँस लेने में भी दिक्कत होने लगी। पूरी तरह टूटने का अहसास लिए रहता था पर मैंने भक्ति और भगवान पर से विश्वास नहीं उठने दिया। मैंने सुना था कि परमात्मा जिसको प्यार करते हैं, जिसको खुद से मिलाना चाहते हैं उसे दु:ख, गरीबी और बीमारी– ये तीन उपहार देते हैं।

जन्म-जन्म का पिता मिला

मैं ऐसे मोड़ पर खड़ा था जहां से जीवन की आबादी या बरबादी का कोई भी रास्ता लिया जा सकता था। भाग्य से मैं आबादी वाले मोड़ की तरफ बढ़ चला और यह परिवर्तन तब हुआ जब मैं Awakening with Brahma Kumaris देखने लगा। Life Skills, Happiness Index जैसी शृंखलाओं से जो ज्ञान मिला उसको धारण करते ही ऐसा चमत्कार हो गया जिसकी मैं आशा किया करता था। कुछ दिनों तक टी.वी. में देखा फिर एक दिन पूछते-पूछते सेवाकेन्द्र जा पहुँचा। सेवाकेन्द्र से जो पालना मिल रही है वो अद्वितीय है। शिवबाबा, मेरा जन्म-जन्म का पिता मुझे मिल गया। शिवबाबा ने मुझे मेरी कमियों के साथ स्वीकार किया तथा बिना किसी शर्त के प्यार भी दिया। ज्ञान को धारण करने के लिए

बहुत सारी शक्ति का संचार भी किया।

परिवर्तन

मेरा शुरू से आदर्श तो यही था कि मैं कुछ भी गलत ना करूँ, एकदम पावन रहूँ लेकिन परखने की शक्ति न होने के कारण गलतियाँ भी करता रहा। एक बार मैंने आठवीं की परीक्षा में नकल की परंतु बाद में जब आत्मग्लानि हुई तो अपने आप से दृढ़ प्रतिज्ञा की कि चाहे कुछ भी हो जाए, सदा ईमानदार रहूँगा। दादी जानकी ने एक बार कहा कि वो बाबा भोलानाथ है, रहमदिल है, कहता है, किया ना, अब नहीं करना। ऐसी-ऐसी बातों से आत्मा में बल भरने लगा, श्रेष्ठ विचारों का प्रभाव शरीर पर आने लगा। दवाई छूटने लगी। शांति के विचारों के प्रकंपन से फेफड़ों को शांति मिली तथा मेरी एलर्जी दूर होने लगी। डर खत्म होने लगा, विचार शुभ होने लगे तो अवसाद कहाँ! मानसिक स्वास्थ्य सुधरने लगा। मेरे सारे प्रश्नों के उत्तर मिल गए। भगवान ने अजामिल का उद्धार किया था, कब किया, कैसे किया, पता लग गया। परमात्मा के बारे में सुना था

सात समंदर मसि करूँ,
लेखनी सब वनराय,
सब धरती कागज करूँ,
हरि गुण लिखा न जाय।।

अब यह मेरा अनुभव बन चुका है कि कैसे वो मुरली में मेरे प्रश्नों के उत्तर देता है तथा हर पल मेरा ध्यान रखता है।

❖

हर कर्म करते उपराम अवस्था

ब्र.कु. भारती बहन

मुझे सन् 1982 में ईश्वरीय ज्ञान का परिचय मिला, तब मैं विद्यार्थी था। सन् 1984 में भारती बहन को मधुबन से मोहिनी बहन बापूनगर (अहमदाबाद) में छोड़ने आयी। यहाँ का सेवाकेन्द्र देख मोहिनी बहन ने कहा, देखो भारती, थोड़े दिन रुको, अच्छा लगे तो और भी रुकना। उस वक्त बापूनगर विस्तार पूरा श्रमिक क्षेत्र था लेकिन भारती बहन ने दृढ़ संकल्प किया था कि कुछ भी हो जाये बाबा की सेवा करनी ही है। पहले मकान छोटा-सा था लेकिन जो भी पार्टी आती थी उसे दिल से, प्यार से बुलाती, खाना खिलाती, यह उनका पहला गुण था। सबको संतुष्ट करती थी। मेरी आयु छोटी थी, गाँव से आया था, अबोध बालक जैसा था। बोलना, उठना, सबके साथ व्यवहार करना यह सब भारती बहन ने मुझे सिखाया।

उनके जीवन में बहुत उतार-चढ़ाव आये। पुराना शरीर साथ नहीं देते हुए भी उन्होंने शरीर को नहीं देखा, सेवाओं को देखा। बहुत ही कम समय में पूरे क्षेत्र में संस्था का नाम रोशन कर दिया। शरीर को कितनी भी तकलीफ थी लेकिन हर समय हंसते हुए चेहरे से बाबा की याद में रहती। अन्त समय तक सुबह तीन बजे उठकर बाबा को याद करती रही।

उन्होंने दधिची ऋषि समान सेवा में हड्डी-हड्डी स्वाहा की। जब दस दिन हास्पिटल में थे तब बाबा ने उनके द्वारा अव्यक्त स्थिति का अनुभव कराया। जब वो खाते थे, बातें करते थे, दृष्टि देते थे तो अनुभव होता था कि वो वतन में हैं। अन्तिम दो मास से उनकी स्थिति उपराम थी। अन्तिम श्वास तक हास्पिटल में पलंग पर बैठे-बैठे सेवा की बातें करते-करते बिना तकलीफ के आत्मा उड़ गई। अव्यक्त स्थिति किसको कहा जाता है, यह हमने दीदी द्वारा अनुभव किया। उनके लिए यही कहेंगे,

सागर जैसा विशाल हृदय, गंगा जैसा पवित्र चरित्र।
सूरज जैसा तेजस्वी जीवन, चंद्रमा जैसा शीतल स्वभाव,
आकाश में ध्रुव तारे जैसा चमकता था उनका जीवन।

ऐसी मीठी, स्नेही दीदी को उनकी प्रथम पुण्यतिथि पर हार्दिक श्रद्धा सुमन अर्पण!

– ब्रह्माकुमार बाबूभाई, इन्डिया कालोनी, अहमदाबाद

कर्मभोग का कर्मयोग में परिवर्तन

● ब्रह्माकुमार बाबू, लेस्टर (यू.के.)

मूलरूप से तारापुर (गुजरात) के रहने वाले बाबू भाई वर्तमान समय लेस्टर (यू.के.) में ब्रह्माकुमारी शाखा अपने घर में चलाते हैं। तारापुर सेवाकेन्द्र की ईश्वरीय विद्यार्थी पन्ना बहन आपकी लौकिक सम्बन्धी थी। प्रस्तुत है बीमारी की हालत में भी पन्ना बहन की सहनशीलता तथा स्थितप्रज्ञ अवस्था का वर्णन बाबू भाई के शब्दों में – सम्पादक

सन् 1998 में अहमदाबाद में आयोजित एक आध्यात्मिक मेले से पन्ना बहन तथा उनके युगल का अलौकिक जन्म हुआ। वे तारापुर के रहने वाले थे पर जहाँ-जहाँ तबादला हुआ, वहाँ-वहाँ सेवाकेन्द्र की सेवा में तन, मन से सहयोगी होकर रहे।

पन्ना बहन को फरवरी, 2013 में थोड़ी शारीरिक तकलीफ हुई, जाँच कराने पर पता चला कि कैन्सर की गाँठ है। उसका आपरेशन हुआ पर डाक्टर ने बता दिया कि दवा से फायदा होने वाला नहीं है, दो मास ही रहेगी, कैन्सर पूरे खून में फैल गया है। जब पन्ना बहन को बताया गया तो सुनकर खुश हुई इसलिए कि अब मैं ज्यादा पुरुषार्थ करूँगी और योगबल से हिसाब-किताब चुक्ता करूँगी। उनसे अन्तिम इच्छा पूछी गई तो यही कहा, सेवाकेन्द्र पर ब्रह्माभोजन का आयोजन किया जाए, लौकिक-अलौकिक सारे परिवार को बुलाया जाए। इस कार्यक्रम के अन्त में अपने सम्बन्धियों को यही सन्देश दिया कि यह आत्मा और परमात्मा के मिलन का सत्य ज्ञान है, आप भी सात दिन का कोर्स करके इसकी प्रारम्भिक जानकारी अवश्य लो।

दिनोंदिन पन्ना बहन की शारीरिक कमज़ोरी बढ़ती गई। पहले भोजन छूटा, फिर ज्यूस भी भारी लगने लगा और केवल भोग के पानी पर ही रहने लगी। जब कभी उल्टी होती, दर्द होता, दिल से बाबा को कहती, बाबा, यह सहन नहीं हो रहा है, बाबा दिल की आवाज़ का प्रत्युत्तर तुरन्त देते और दर्द हलका हो जाता।

एक दिन उनके सुपुत्र का डाक्टर मित्र मिलने आया। उसे आश्चर्य हुआ कि कैन्सर की बीमारी में बिना दर्द इतनी शान्त अवस्था! फिर उसने अन्तिम इच्छा पूछी तो पन्ना बहन ने कहा, आप सात दिन का ज्ञान का कोर्स करो। डाक्टर ने सेन्टर पर जाकर ईश्वरीय ज्ञान का कोर्स किया।

हम लेस्टर (यू.के.) से उनको फोन करते थे। सुनती थी, उत्तर नहीं

दे पाती थी। निमित्त बहन-भाई ज्ञान-योग की कॉमेन्ट्री सुनाते रहते थे। एक बुधवार को इशारे से कहा, कल सतगुरुवार को शरीर छोड़ूँगी। सतगुरुवार को रात्रि 12 बजे मीठे बाबा...प्यारे बाबा..... बाबा..... बाबा.... की रटन में ही माखन से बाल की तरह आत्मा शरीर से न्यारी हो उड़ गई।

पन्ना बहन का स्वभाव बहुत ही सरल था। भोलानाथ की एकदम भोली बच्ची थी। न मन में कोई खटपट, न इधर-उधर की बातें, न किसी के अवगुण दर्शन-वर्णन, न मन पर बोझ। उनकी पुत्रवधू भी कहती हैं, घर में बाबा का साहित्य पढ़ती रहती थी, सकारात्मक विचारों वाली थी, मुझे भी अपने साथ ज्ञान-योग सीखने

ले चलती थी। जीते जी बाबा के सिवाय उनकी बुद्धि में कुछ नहीं था। अन्त में भी एक बाबा की याद में समा गई। इस प्रकार लौकिक सम्बन्धियों पर ईश्वरीय शक्तियों की छाप लगाकर, आगे बाबा की सेवा में पुन: निमित्त बन पार्ट बजाने के लिए वह आत्मा बापदादा की बाँहों में समा गई। जब से पन्ना बहन बीमार हुई थी, उनकी सुपुत्री उनके साथ रहती थी। पन्ना बहन ने उससे कह दिया था कि मेरे शरीर छोड़ने पर बिल्कुल रोना नहीं है। गृहस्थ में रहते ट्रस्टी हो रहने वाली ऐसी त्यागी, तपस्वी पन्ना बहन को हार्दिक श्रद्धासुमन अर्पित हैं। ❖

नया जन्म

ब्रह्माकुमार ओमप्रकाश, भिवंडी

मैं पिछले 6 वर्षों से ईश्वरीय ज्ञान तथा राजयोग का अभ्यास कर रहा हूँ। इसी दौरान एक बार गाँव गया तो खेत में नीम के पेड़ पर दातुन लेने चढ़ गया। उस पेड़ के बिल्कुल ऊपर 11000 वोल्ट (Volt) वाली बिजली की तारें थी। दातुन तोड़ने के लिए एक टहनी को पकड़ने लगा तो उन तारों से स्पर्श हो गया और मुझे बिजली ने पकड़ लिया। मेरे मन में तुरन्त विचार आया कि अब मुझे भगवान के घर जाना है। मेरे मुख से तो बाबा-बाबा, बचाओ बाबा, छुड़ाओ बाबा.... का निरन्तर जाप चल रहा था। तभी कमाल हो गया, बाबा ने पेड़ से मानो अपनी गोद में लेकर मुझे नीचे जमीन पर लिटा दिया। लगभग 30 मिनट तक बेहोश रहा। होश आने पर सोचने लगा कि मैं तो मर गया था पर बाबा ने ही मुझे पुन: जिन्दा किया है। इसके बाद घर में जाकर बाबा के (चित्र के) सम्मुख बैठकर योग किया, बाबा को लाख-लाख शुक्रिया करने के साथ-साथ यह जीवन पूरी तरह बाबा के नाम कर दिया। ऐसा लगा कि मेरा कोई जन्म बाकी था जिसे बाबा ने इसी जन्म के साथ जोड़ दिया।

बाबा से नया जीवन पाकर मैंने पुन: पढ़ना शुरू किया, मन लगाकर पढ़ा और अब मेरा जीवन हीरे जैसा, कीचड़ में कमल जैसा खिल गया है। मैंने प्रण किया है, मैं फूल बनकर सदा सभी को सुख देता रहूँगा। मन में यही गीत बज रहा है

प्यारे बाबा तुम तो मेरे आस-पास हो।
मुसीबतों में मेरे साथ-साथ हो।।

रावण की चुनौती

ब्रह्माकुमार शक्ति स्वरूप,
कपूरथला (पंजाब)

कौन कहता है रावण मर गया,
ऐसी बातों से मैं नहीं डर गया।

मैं तो अभी जिंदा हूँ,
अपने किये पर नहीं शरमिन्दा हूँ।

मेरे वंशज अभी जीते हैं,
और सीताओं का खून पीते हैं।

अनेक लोग मैंने उलझा रखे हैं,
विकारों के तीर चला रखे हैं।

कुम्भकर्ण की नींद सुला रखे हैं,
अज्ञान अन्धेरे फैला रखे हैं।

कहने को वो मुझे हर साल जलाते हैं,
समझते नहीं, वो मुझे मार नहीं पाते हैं।

मैं तो मानव, गुप्त रह कर भी रोशन हो गया,
कौन कहता है बताओ, अन्दर से रावण मर गया।

सर्वव्यापी हूँ मैं, सर्वव्यापी शिव नहीं,
सबके मन में हूँ मैं, सबके मन में शिव नहीं।

नहीं जानते तुम, ज्ञान-बाण से मरता हूँ,
इन पटाकों से नहीं, योग-अग्नि से जलता हूँ।

कर्मगति के ज्ञान द्वारा व्यर्थ संकल्पों से मुक्ति

● ब्रह्माकुमार भगवान, शान्तिवन

मन में चलने वाले व्यर्थ संकल्पों से बुद्धि की एकाग्रता के साथ-साथ निर्णय शक्ति, परख शक्ति, सहनशक्ति, सामना करने की शक्ति नष्ट हो जाती है जिससे जीवन में असफलता मिलती है। व्यर्थ विचारों से मुख से व्यर्थ बोल निकलते हैं, कर्म भी व्यर्थ हो जाते हैं और जीवन भी लक्ष्यहीन बन जाता है। इसलिए अगर जीवन को श्रेष्ठ बनाना है तो मन में चलने वाले व्यर्थ संकल्पों से स्वयं को मुक्त रखने की आवश्यकता है। जो व्यर्थ से मुक्त है उसकी बुद्धि में ज्ञान का झरना बहता रहता है। ज्ञान का चिन्तन करते रहने से आचरण में बदलाव आता है।

कोई देने, कोई लेने आता है

वैसे तो मन में व्यर्थ संकल्प चलने के अनेक कारण हैं परंतु जीवन में आने वाली विपरीत परिस्थिति या विपरीत घटना में जब कर्मगति को भूल जाते हैं तब मन में व्यर्थ विचार चलने शुरू हो जाते हैं। नकारात्मक विचारों से नकारात्मक वृत्ति, नकारात्मक भावना, नकारात्मक दृष्टिकोण और नकारात्मक व्यवहार बन जाता है। फिर न चाहते हुए भी यह क्यों हुआ, यह कैसे हुआ..ऐसे व्यर्थ विचार चलते हैं। जीवन में हर परिस्थिति हरेक के कर्मों के अनुसार आती है। यह सारी दुनिया कर्मों के आधार से ही चलती है। कर्म अनुसार हरेक को फल मिलता है। अपने संबंध-संपर्क में कोई व्यक्ति कर्मों का हिसाब देने के लिए और कोई लेने के लिए आता है।

कर्मगति को समझने के लिए एक कहानी इस प्रकार है – एक माता जी के दो जुड़वाँ बच्चे थे, दोनों खेल रहे थे। खेलते-खेलते उन दोनों का मुँह एक-दूसरे की तरफ हो गया। एक बच्चे ने दूसरे बच्चे से पूछा कि तुम इस घर में क्यों आये हो, तो उसने कहा कि मैं छटाँक (लगभग 60 ग्राम) भर तेल लेने के लिए आया हूं। इसी प्रकार दूसरे बच्चे ने पूछा कि तुम इस घर में क्यों आये हो, तो पहले बच्चे ने कहा कि मैं तीन तोला सोना देने के लिए आया हूँ। दोनों का बोलना सुनकर माताजी के मन में प्रश्न उठा कि इनमें से तेल कौन लेगा और सोना कौन देगा क्योंकि दोनों एक जैसे थे। माताजी ने दोनों बच्चों को तेल लगाकर सुलाया। उनमें से एक बच्चा अचानक मर गया तो माताजी समझ गई कि यह बच्चा अपना तेल लेने का हिसाब-किताब चुक्ता करके चला गया। अब उसके मन में प्रश्न बचा कि दूसरा बच्चा तीन तोला सोना देने वाला है पर कैसे? वह बच्चा बड़ा हो गया, गरीब होने के बावजूद वह स्कूल में होशियार था। दसवीं में बोर्ड की परीक्षा में उसका पहला नम्बर आया। गाँव के सरपंच ने उस बच्चे को ग्राम-सभा में बुलाकर सत्कार किया। सत्कार में उसके गले में माला डाली, सिर पर ताज पहनाया, एक किताब भेंट की और उस किताब में तीन सोने के पत्ते रखे।

बच्चे को बहुत खुशी हुई। उसको लगा कि यह मेरा सम्मान माँ की मेहनत के कारण हुआ है। यह सब सुनाने के लिए गले की माला, ताज और किताब लेकर घर की तरफ दौड़ता गया। माँ झोपड़-पट्टी में रहती थी। झोपड़-पट्टी की चौखट छोटी थी और झुक करके अंदर जाना पड़ता था। चौखट में एक कील लगी हुई थी। बच्चे का सम्मान हुआ था, इस खुशी में वह झुकना भूल गया तथा कील उसके सिर में घुस गई और वह वहीं पर मर गया। माँ को उसकी बाजू में गिरी हुई किताब से तीन सोने के पत्ते मिले। उन्हें देख उसे बचपन में कही गई बात की याद आई कि यह तीन तोला सोना देने आया था सो आज देकर चला गया।

याद रखें कर्मगति को

ताली कभी भी एक हाथ से नहीं बजती, ताली बजाने के लिए दो हाथ चाहिएँ। कभी-कभी हम कहते हैं कि

मैं इसके साथ बहुत अच्छा व्यवहार करता हूँ फिर भी यह मेरे साथ ऐसा क्यों करता है? कभी-कभी ऊपर भगवान की तरफ देखकर भी कहते हैं कि हे भगवान, आपने भी आँखें बंद कर ली हैं क्या, जो मेरे साथ ऐसा अन्याय हो रहा है। परंतु इन सभी प्रश्नों का जवाब हमारे पिछले जन्मों में किये गये कर्म हैं। हम जो भी कुछ विपरीत देखते हैं, उसका दोष दूसरों पर लगाकर स्वयं को निर्दोष समझते हैं। जिसको दोषी समझते हैं, उस व्यक्ति के बारे में अपने भाव-भावना, दृष्टि-दृष्टिकोण को नकारात्मक बना लेते हैं। इससे उस व्यक्ति के संस्कारों के साथ टक्कर हो जाती है। इसी टक्कर में व्यर्थ समय और व्यर्थ संकल्प चलते हैं। इसलिए कर्मगति को सदा याद रखें तब व्यर्थ से मुक्त बन सकेंगे।

नहीं भाग सकता कोई कर्मों से

सास अगर बहू के ऊपर अन्याय करती है, तो बहू के मन में सास के व्यवहार के बारे में घृणा निर्मित होती है और नकारात्मक विचार चलते हैं। लेकिन यदि सास और बहू का पिछला जन्म दिखाया जाये तो आश्चर्य होगा कि जो आज सास है वह पिछले जन्म में बहू थी और जो आज बहू है वह पिछले जन्म में सास थी। उसने भी बहू के साथ कई तरह से दुर्व्यवहार किया था और सत्संग में जाने से मना किया था। इस जन्म में जब हिसाब चुक्ता होते हैं तब मन में नकारात्मक विचार क्यों? किये हुए कर्मों से कोई भी भाग नहीं सकता। किये हुए कर्मों के आधार से ही शरीर मिलता है, संपत्ति मिलती है, संबंधी मिलते हैं। वर्तमान समय शिव परमात्मा श्रीमत रूपी ज्ञान देकर श्रेष्ठ कर्म करने की कला सिखलाते हैं। जो ईश्वरीय श्रीमत प्रमाण चलता है वही श्रेष्ठ बनता है और व्यर्थ से मुक्त बनता है। श्रीमत के द्वारा ही उमंग-उत्साह और दैवी गुणों की प्राप्ति होती है। जो मनमत या परमत पर चलता है उसे जीवन में दुख-अशान्ति मिलती है। श्रीमत प्रमाण चलते हुए भी अगर कोई विपरीत परिस्थिति आती है तो उसे हिसाब-किताब समझकर निश्चयबुद्धि बन आगे बढ़ते रहना है।

कुछ दिन पहले एक बहन जी ने मुझे एक अनुभव सुनाया जिससे कर्मगति का पाठ और ही पक्का हो गया। वे बहनजी 30 वर्षों से ब्रह्माकुमारीज़ में समर्पित रूप से सेवा कर रही हैं। अचानक उनके पेट में दर्द होने लगा तो ग्लोबल अस्पताल में जाँच करने के लिए आई। एक्सरे करने के बाद पता चला कि पेट में गाँठ है, ऑपरेशन करना पड़ेगा। ऑपरेशन थियेटर में जाने से पूर्व बहनजी बाबा से बोली, बाबा, मैंने इतनी सेवा की फिर भी मुझे दर्द हो रहा है, कौन-से कर्मों का फल मुझे मिल रहा है। रूहरिहान करते-करते वह ध्यान में गई और पिछले जन्म का दृश्य देखा। पिछले जन्म में उसने भारत में जन्म लिया था और पुरुष के शरीर में थी तथा पुलिस की नौकरी थी। उसकी ड्यूटी एक चौराहे पर लगी थी। उनको आदेश मिला था कि कोई किसी को तंग करता है तो उसको गोली मारो। एक व्यक्ति किसी को तंग कर रहा था तो उस पुलिस वाले ने देखते ही गोली मारी। वह गोली उसको न लग करके पीछे बगीचे में घास काटती हुई एक माता के पेट में लगी। उसको बहुत पीड़ा हुई। यह दृश्य बाबा ने बहन जी को दिखाया और कहा कि इस कारण से तुम्हारे पेट में दर्द रहता है, अब उस कर्म का हिसाब-किताब चुक्ता हो रहा है।

कर्म के ज्ञान से आती है सहनशीलता

कहने का तात्पर्य यह है कि हमने जन्म-जन्मांतर जाने-अनजाने ऐसे अनेक कर्म किये हैं जिनको वर्तमान समय विपरीत घटना के रूप में भोगना पड़ता है। ऐसे समय में मन के वेग को रोकने के लिए कर्मगति को सदा याद रखना है। विपरीत परिस्थिति या विघ्न निर्माण करने वालों के प्रति मन में क्षमा भाव, दया भाव, निर्दोष दृष्टिकोण निर्माण करने में कर्मगति का ज्ञान बहुत मदद करता है। इससे हर

परिस्थिति को सहन करने की शक्ति मिलती है। जब हम व्यर्थ संकल्पों से मुक्त बनेंगे तब मन हलका और बुद्धि स्वच्छ रख योग का अभ्यास भी अच्छी तरह कर सकेंगे। व्यर्थ से मुक्त बनने से ही हम परचिन्तन, परदर्शन से मुक्त होकर स्वमानधारी बन सकेंगे। सभी के साथ हमारा व्यवहार भी निर्दोष भाव से और संतुष्ट चेहरे से रहेगा। इससे ही हम तीव्र पुरुषार्थी बन सकेंगे इसलिए कर्मगति को जान व्यर्थ से मुक्त बनें। ❖

ब्लाकेज दूर हो गए

ब्रह्माकुमारी कोकिला, ओढ़व (अहमदाबाद)

मेरी उम्र 57 वर्ष है। पाँच साल पहले मेरी छाती में दर्द हुआ लेकिन मैंने इतना ध्यान नहीं दिया। साल भर यह तकलीफ चलती रही। एक दिन दर्द इतना ज्यादा हुआ जो सहन नहीं हुआ और चलने में भी तकलीफ होने लगी। उस समय मैं शान्तिवन (आबूरोड) में थी। वहाँ डा.सतीश गुप्ता भाई जी से मिली तो उन्होंने मुझे दवाई दी और हृदय की एन्जियोग्राफी करवाने की सलाह दी। अहमदाबाद काकडिया अस्पताल में 15 जुलाई, 2009 को मेरी एन्जियोग्राफी की गई जिसमें हृदय की तीन धमनियों में ब्लाक पाए गए। एल.ए.डी. में 80%, आर.सी.ए.में 80% तथा एल.सी.एक्स. में 30% ब्लाक पाए गये। डाक्टर ने मुझे एन्जियोप्लास्टी या बाईपास सर्जरी करवाने का सुझाव दिया लेकिन मैंने यह रिपोर्ट डा.सतीश गुप्ता भाई जी को आबू भेज दी। उन्होंने रिपोर्ट देखने के बाद शान्तिवन में होने वाले अगले 3डी हेल्थ केयर फॉर हेल्दी हार्ट प्रोग्राम में भाग लेने का निमंत्रण-पत्र भेजा।

प्रोग्राम में भाग लेने के समय मुझे चलने-बोलने में काफी तकलीफ होती थी। मुरली क्लास भी नहीं करवा सकती थी। आधा घंटा भी बोल नहीं सकती थी। प्रोग्राम में बताई गई सारी बातें मैंने जीवन में अपनाईं और इससे जीवन शैली में बहुत परिवर्तन हुआ। इसके बाद दर्द का एहसास नहीं रहा और मुरली क्लास भी अच्छी तरह करवाने लगी। हृदय की कोई तकलीफ मुझे नहीं रही।

राजयोग के अभ्यास से 3डी हेल्थ केयर फॉर हेल्दी हार्ट प्रोग्राम में काफी मदद मिलती है। राजयोग के अभ्यास द्वारा अनुभव हुआ कि बाबा की शक्ति की किरणें, लाइट की किरणें मेरे हृदय के ऊपर पड़ रही हैं और मेरे ब्लाकेज खुल रहे हैं। सुप्रीम सर्जन शिवबाबा ने हृदय का रूहानी आपरेशन (चीर-फाड़) करके ब्लाकेज को खोल दिया, ऐसा मैंने अनुभव किया। ऐसा रूहानी आपरेशन शिवबाबा के सिवाय और कोई कर नहीं सकता। इसमें जिस्मानी सर्जन की कोई ज़रूरत नहीं पड़ती है। इस कार्यक्रम के चार पहलू हैं – सात्विक, कम वसायुक्त, अधिक रेशे वाला शाकाहारी भोजन, प्रतिदिन प्रात: सूर्योदय के बाद 45 मिनट परमात्मा की याद में तेज सैर, सूर्यास्त से पहले 30 मिनट परमात्मा की याद में सैर, ज़रूरत अनुसार दवाई। इन चार ही बातों पर ध्यान देकर इन्हें जीवनशैली में अपनाया जिसके फलस्वरूप मेरे हृदय की बीमारी दूर हो गई।

मैंने 8 सितंबर, 2010 को अपोलो अस्पताल अहमदाबाद में पुन: एन्जियोग्राफी करवाई जिसमें तीन में से दो धमनियों के ब्लाक पूरी तरह से खुल गये थे। एल.ए.डी. 80% से 0% और एल.सी.एक्स. 30% से 0% हो गई थी। मेरा आप सब भाई-बहनों से यही निवेदन है कि बाबा की श्रीमत अनुसार शरीर रूपी मोटर को सही रखने के लिए इस तरह की स्वस्थ जीवनशैली अपनायें ताकि रोगों से मुक्त रहकर संगमयुग का कीमती समय बचाकर शिवबाबा की आशाओं को पूर्ण कर सकें। ❖

सफलता का मंत्र – मुझे स्वयं में विश्वास है

● ब्रह्माकुमार ललित, शान्तिवन

वर्ष 2006 की बात है। मैं उस समय ब्रह्माकुमारीज़ के अहमदाबाद, महादेवनगर सेवाकेन्द्र पर रहता था। वरिष्ठ राजयोगी भ्राता रमेश जी ने ब्रह्माकुमारीज़ से सम्बन्धित आयकर विभाग का एक कार्य मुझे सौंपा था जो मुझे जोधपुर आयकर ऑफिस में करना था। हालांकि मैं अहमदाबाद में सी.ए.की प्रैक्टिस करता था और वह कार्य मेरे लिये नया था परन्तु बड़ों ने विश्वास रखकर सौंपा तो मैंने सहजता से हाँ कर दी। मन में यही विचार चल रहे थे कि बाबा का कार्य है, बड़ों ने कहा है इसलिये सहज रीति से सफलतापूर्वक सम्पन्न हो जाएगा। मुझे तो केवल निमित्त बनना है। जनवरी 21, 2007 को दादी जानकी जी से छुट्टी लेकर जोधपुर गया। उस सेवार्थ 2-3 बार जोधपुर जाना पड़ा। अन्ततः कार्य सफल हो गया। कार्य इतना बड़ा था जो भारत में स्थित ब्रह्माकुमारीज़ के सभी सेवाकेन्द्रों को प्रभावित कर रहा था।

आयकर विभाग के अधिकारियों ने अप्रत्याशित रूप से सलाह दी और पूरा सहयोग दिया। रमेश भाई जी मुम्बई से समय प्रति समय मुझे फोन पर नवीनतम समाचार पूछते थे। जब कार्य के पूरा होने का समाचार रमेश भाई जी एवं दादी जानकी जी को दिया तो उन्होंने फोन पर अनेक बधाइयों एवं वरदानों से मेरी झोली भर दी। जब मधुबन आकर दादी गुलज़ार जी को समाचार सुनाया तो उन्होंने जो बात मुझे बताई वह आज भी मेरे मन-बुद्धि को प्रकाशित करती रहती है। उन्होंने कहा कि आपको सफलता इसलिये मिलती है क्योंकि आप के मन में सफलता के ही संकल्प हैं।

जब दादी जी की इस बात पर मन्थन किया तो समझ में आया कि सफलता प्राप्ति के लिये यह ज़रूरी है कि स्वयं में पूर्ण विश्वास हो कि मुझे सफलता मिलनी ही है। सफल नहीं होने का कोई कारण ही नहीं है। ईश्वर का कार्य है, श्रीमत पर चलकर कर रहा हूँ, बड़ों की आज्ञा है, साथियों की शुभ कामना है और ड्रामा चाहता है इसलिये कार्य हुआ ही पड़ा है ।

मेरा विवेक मुझे स्मृति दिलाता है कि आज दिन तक मेरा हर कदम मुझे सफलता के नज़दीक ले गया है और मेरे में वे सारी शक्तियां हैं जो सफलता प्राप्ति के लिये ज़रूरी हैं इसलिये सफलता का हार भविष्य में भी मेरे गले में पड़ना ही है। परिस्थितियाँ धीरे-धीरे मेरे पक्ष में होती जाती हैं। मेरा आत्मविश्वास दुगना हो जाता है। स्वयं में विश्वास वह चुम्बक है जो सफलता की सूई को अपनी ओर खींचता है। स्वयं में विश्वास भी तभी उत्पन्न होगा जब हमारा व्यक्तित्व सकारात्मक होगा, हम सर्व गुणों एवं शक्तियों को जीवन में लाने के लिये प्रयासरत होंगे। स्वयं में विश्वास होने के कारण कार्य का तनाव उत्पन्न नहीं होता है, मन-बुद्धि शान्त एवं सहज रीति कार्यशील होते हैं जिससे समय पर सही निर्णय ले पाते हैं। बाबा की प्रेरणाएँ सही रीति पकड़ पाते हैं। स्वयं में विश्वास होने के कारण उमंग-उत्साह सहज ही बना रहता है। कोई व्यक्ति या परिस्थिति बार-बार हमें कार्य की याद दिलाए तब हम अपने कदम बढ़ाएं इसकी बजाय हम स्वयं ही कार्य सम्पादन में लगे रहते हैं। जैसे धक्के से चलने वाली गाड़ी न होकर स्वचालित गाड़ी की तरह कार्य करते हैं।

हमारे आत्मविश्वास से भरे प्रकम्पन सामने वाले व्यक्ति को भी सकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं। इच्छा न होते हुए भी वह हमें मदद करने को तैयार हो जाता है। हमारा विश्वास उसे निराशा से निकाल आशावान बना देता है। कहते भी हैं कि अटूट विश्वास से हिमालय जैसे पहाड़ को भी हिलाया जा सकता है। अगर हमें स्वयं में ही विश्वास नहीं होगा तो आखिर कोई कब तक हमें

चलाएगा? इसीलिये किसी भी कार्य को शुरू करने से पहले स्वयं दृढ़तापूर्वक संकल्प कर लें कि यह कार्य हुआ ही पड़ा है। सफलता मिलनी ही है।

मैंने जब से ब्रह्माकुमारीज़ में सिखाए जाने वाले राजयोग का अभ्यास करना शुरू किया, मेरा अपने में विश्वास बढ़ता ही गया। अपने में विश्वास पैदा करने के लिये पहले अपना वास्तविक स्वरूप अर्थात् आत्मिक रूप पहचानना ज़रूरी है। आत्मा में निश्चय होते ही आत्मा की विशेषताओं जैसे कि अजर, अमर, अविनाशी, शाश्वत और उसके सातों स्वरूपों में निश्चय हो जाता है। इसके आधार पर सकारात्मक विचार, वाणी और व्यवहार सहज हो जाते हैं। आत्मिक स्वरूप में स्थित होने से समय पर परमात्मा की मदद भी मिल जाती है जिससे सफलता सहज हो जाती है।

जब हम अपने मन में किसी अन्य के प्रति ईर्ष्या, भय, घृणा के भाव रखते हैं तो हमारा अपने में ही विश्वास कम हो जाता है, यह एक आध्यात्मिक नियम है। इससे हमारी एकाग्रता टूट जाती है एवं हम दूसरों से प्रभावित हो जाते हैं। अत: मन को इन सूक्ष्म विकारों से अलग कर दें।

अन्त में यही कहूंगा कि सफल होना चाहते हैं तो पहले स्वयं पर विश्वास करें, अपनी शक्तियों पर विश्वास करें। अपनी डायरी में अपनी वे दस विशेषताएँ, गुण, शक्तियाँ अवश्य लिखें जो आपको सफलता दिला सकती हैं।

❖

श्रद्धांजलि

हम सबकी अति स्नेही, बापदादा की अति लाडली, यज्ञ की आदि रतन, नम्रता की मूर्ति मीठी पालू दादी बचपन में ही यज्ञ स्थापना के समय समर्पित हो गई और बड़े प्यार से भारत के विभिन्न स्थानों पर सेवायें देती रही। काफी समय से आप आबू रोड संगम भवन में रहकर सभी भाई-बहनों की बहुत प्यार से ज्ञान-योग से पालना करती रही। कुछ समय से आपकी तबियत ठीक नहीं थी। पहले ग्लोबल हास्पिटल में इलाज चला। फिर अहमदाबाद लेकर गये, जहाँ 23 अगस्त 2013 शुक्रवार को सायं 8.30 बजे आप अपना पुराना शरीर छोड़ बापदादा की गोद में चली गई। आपके पार्थिव शरीर को रात में ही आबू लेकर आये, 24 अगस्त को मधुबन के चारों धामों की यात्रा कराते हुए सर्व भाई-बहनों की उपस्थिति में अन्तिम संस्कार किया गया। ऐसी स्नेही, आदि रतन, महान आत्मा को पूरा दैवी परिवार बहुत स्नेह से श्रद्धा सुमन अर्पित करता है।

बापदादा की अति लाडली, अथक सेवाधारी, साकार मात-पिता के हस्तों से पली हुई मीठी सुधा बहन, महाराष्ट्र ज़ोन में बुरहानपुर सबज़ोन की मुख्य संचालिका थी। आप दो बहनें (रानी बहन मुजफ्फपुर-बिहार, सुधा बहन बुरहानपुर-मध्य प्रदेश) बचपन से ही अपनी लौकिक माता पुष्पाल बहन के साथ बापदादा के पास आई और समर्पित हो गई। सुधा बहन बहुत शान्त, गम्भीर, मिलनसार अनेक विशेषताओं से सम्पन्न थी। आपने अपनी विशेषताओं के आधार पर बुरहानपुर क्षेत्र में कई सेवाकेन्द्र, उपसेवाकेन्द्र, गीता पाठशालायें खोली। आपकी अथक सेवा और स्नेह भरी पालना से बहुत बड़ा ईश्वरीय परिवार निर्विघ्न रूप से ज्ञान में चल रहा है। आपको 29-8-13 को सवेरे थोड़ी तकलीफ महसूस हुई तो हास्पिटल में लेकर गये, वहाँ दोपहर में आपने अपना पुराना शरीर छोड़ बापदादा की गोद ली (आपको कुछ समय से हार्ट की तकलीफ चल रही थी)। ऐसी स्नेही, अथक सेवाधारी, महान आत्मा को पूरा दैवी परिवार बहुत स्नेह से श्रद्धा सुमन अर्पित करता है।

नाक-कान-गले की बीमारियाँ एवं उपचार

● ब्रह्माकुमार रामलखन, शान्तिवन

वैद्यनाथ शिव बाबा और उनके जवाबदार बच्चों द्वारा आदिवासी बहुल पर्वतीय आबू अंचल में जब ग्लोबल हास्पिटल एवं रिसर्च सेन्टर की नींव रखी गयी तो उसमें नाक-कान-गला विभाग को उचित स्थान दिया गया। करीब 18 सालों से इसके विशेषज्ञ डा.शरद मेहता जी हर महीने हजारों स्थानीय लोगों के साथ-साथ देश-विदेश के लोगों का विधिवत् उपचार करके उन्हें सुकून पहुँचाते हैं। ग्लोबल में इनडोर और आउटडोर, मेडिकल तथा सर्जिकल दोनों ही प्रकार की बेहतरीन सुविधायें दर्दियों के लिए उपलब्ध हैं।

इस रेगिस्तानी पर्वतीय क्षेत्र में कान की बीमारियां तो सर्वव्यापी ही समझिए। आन्तरिक कान के विकार से होने वाला बहरापन जन्मजात और कभी-कभी पर्वतीय अंचल की बदलती जलवायु के कारण भी हो जाया करता है। यह बीमारी कीटाणुओं के संक्रमण, विस्फोटक आवाज़ों, दुर्घटनाओं, मधुमेह और उसकी अधिकता से भी हो जाया करती है। जन्मजात बहरे लोगों में बोली का विकास भी प्रभावित हुए बिना नहीं रहता है। इसके इलाज के लिए ग्लोबल में BERA की उत्तम सुविधायें भी उपलब्ध हैं। इन मशीनों के द्वारा विभिन्न प्रकार के बहरेपन के निदान में पूर्ण मदद मिलती है तथा बहरेपन का ठीक से पता भी चल जाता है। डा.मेहता और उनकी टीम यहाँ कान की हर प्रकार की बीमारी की विधिवत् माइक्रो सर्जरी जैसे टिम्पेनोप्लास्टी, स्टेपीडेक्टमी, मास्टोइडेक्टोमी आदि करते रहते हैं। इसी प्रकार मध्य कान में संक्रमण के कारण मवाद निकलने लगता है। ऐसा होने से किसी भी उम्र में कान के पर्दे में छिद्र और उसकी हड्डियों में सड़न हो सकती है। मध्य कान के संक्रमण के कारण बहरापन सामान्य शिकायत है जिसका समयानुसार इलाज न कराया जाए तो यह संक्रमण मस्तिष्क तक पहुँचकर जानलेवा साबित हो सकता है। इसके विकृत होने पर चेहरे का लकवा होने की सम्भावना बढ़ जाती है।

औद्योगिक और आज के आधुनिक युग में ध्वनि प्रदूषण के कारण बहरेपन की शिकायतें युवा लोगों में भी मिलने लगी हैं। मोबाइल फोन और शोर मचाने वाले संगीत आदि का उपयोग इसीलिए हमें कम से कम समय के लिए करना चाहिए।

ग्लोबल हास्पिटल के नाक-कान-गला विभाग में जीभ-मुख-गले-थायराइड व पेरोटिड ग्रंथि की गांठों व कैंसर के उत्तम निदान व सर्जिकल सुविधायें भी उपलब्ध हैं। यहाँ फाइबर आप्टिक लैटिम्पेस्क्रोपी द्वारा सबर पेटी से सम्बन्धित बीमारियाँ जैसे वोकल, नीड्यूल, मस्से तथा कैंसर की जाँच भी की जाती है जिनके आधार से सर्जरी या दवाइयों के द्वारा बेहतर निदान होता है। यदि प्रारम्भिक अवस्था में सर्जरी व इलाज पूर्ण रीति से कर दिया जाता है तो कैंसर को लाइलाज नहीं कह सकते हैं। मुँह का पुराना छाला, जीभ पर छाले या गाँठें, गले में आवाज परिवर्तन, गाँठ या खाने में तकलीफ होने पर मुख्य चिकित्सक डा.मेहता से परामर्श लेने पर समयानुसार पूर्ण लाभ मिल सकता है। इस हास्पिटल के स्वच्छ-सुरम्य-योगयुक्त और शान्तिमय वातावरण में उपचार लेने से सभी रोगों का समापन बहुत ही शीघ्रता से होता है। यहाँ के स्टाफ का सद्व्यवहार दवा के साथ-साथ दुआ जैसा कर्म करता है। थायराइड, गाँठ या कैंसर की छोटी गांठों का माइक्रो सर्जरी के द्वारा पूर्ण उपचार यहाँ उपलब्ध है।

नाक तथा कान के पर्दे के टेढ़ेपन के कारण सांस लेने में तकलीफ होती रहती है। ग्लोबल हास्पिटल में इन्डोस्कोपी साइनस सर्जरी की भी

(शेष..पृष्ठ 20 पर)

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। संयुक्त सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail : omshantipress@bkivv.org Ph. No. : (02974) - 228125 gyanamritpatrika@bkivv.org

1.राजविराज (नेपाल)- उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश भ्राता ओमप्रकाश मिश्र को राखी बाँधते हुए ब्र.कु. भगवती बहन। **2.लखनऊ-** उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री भ्राता अखिलेश यादव को राखी बाँधते हुए ब्र.कु. राधा बहन। **3.पानीपत-** हरियाणा के मुख्यमंत्री भ्राता भूपेन्द्र सिंह हुड्डा को राखी बाँधते हुए ब्र.कु. सरला बहन। **4.चम्बा-** हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री भ्राता वीरभद्र सिंह को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. सोनिया बहन। **5.देहरादून-** उत्तराखण्ड विधानसभा के प्रतिपक्ष के नेता भ्राता अजय भट्ट को राखी बाँधते हुए ब्र.कु. प्रेमलता बहन। **6.फरीदाबाद-** हरियाणा के कैबिनेट मंत्री चौ.महेन्द्र प्रताप सिंह को राखी बाँधते हुए ब्र.कु. कौशल्या बहन। **7.दिल्ली (पीतमपुरा)-** पंजाब केसरी समाचार पत्र के मुख्य संपादक भ्राता अश्विनी कुमार को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. प्रभा बहन। **8.अहमदनगर-** प्रसिद्ध समाजसेवी भ्राता अन्ना हजारे को राखी बाँधते हुए ब्र.कु. राजेश्वरी बहन। **9.कानपुर-** कल्याणपुर- छत्रपति साहू जी महाराज विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.अशोक कुमार को राखी बाँधते हुए ब्र.कु. उमा बहन। **10.नई दिल्ली (हरिनगर)-** गुरु गोविन्द सिंह विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. दिलीप कुमार बन्दोपाध्याय को राखी बाँधते हुए ब्र.कु. कमलेश बहन। **11.टोंक-** वनस्थली विद्यापीठ के कुलपति भ्राता आदित्य शास्त्री को राखी बाँधते हुए ब्र.कु. रानी बहन। **12. दिल्ली (मोहम्मदपुर)-** समाजसेवी डॉ.किरण बेदी बहन को राखी बाँधते हुए ब्र.कु. मीरा बहन।

1.**नवी मुम्बई (वाशी)**- महाराष्ट्र के श्रम, पर्यावरण एवं आबकारी मंत्री भ्राता गणेश नाईक को राखी बाँधते हुए ब्र.कु. शीला बहन। 2.**गुवाहाटी (रूप नगर)**- आसाम के आबकारी, खेल एवं युवा कल्याण मंत्री भ्राता अजीत सिंह को राखी बाँधते हुए ब्र.कु. दीपांजली बहन। 3.**सुनाम**- पंजाब के वित्त मंत्री भ्राता परमिंदर सिंह ढींढसा को राखी बाँधते हुए ब्र.कु. मीरा बहन। 4.**शहादा**- महाराष्ट्र के खेल एवं युवा कल्याण मंत्री भ्राता पदमाकर वलवी को राखी बाँधते हुए ब्र.कु. निर्मला बहन। 5.**चन्द्रपुर**- महाराष्ट्र के संस्कृति तथा पर्यावरण मंत्री भ्राता संजय देवताले को राखी बाँधते हुए ब्र.कु. कुन्दा बहन। 6.**जुईकलां**- हरियाणा की आबकारी व कराधान मंत्री बहन किरण चौधरी को राखी बाँधते हुए ब्र.कु. निर्मला बहन। 7.**मिर्जापुर**- उत्तरप्रदेश के आधारभूत शिक्षा तथा बालकल्याण राज्यमंत्री भ्राता कैलाश चौरसिया को राखी बाँधते हुए ब्र.कु. बिन्दु बहन। 8.**मंडला**- मध्य प्रदेश के ग्राम विकास राज्यमंत्री भ्राता देवी सिंह सैयम को राखी बाँधते हुए ब्र.कु. ममता बहन। 9.**बिलासपुर**- छत्तीसगढ़ के स्वास्थ्य तथा परिवार कल्याण मंत्री भ्राता अमर अग्रवाल को राखी बाँधते हुए ब्र.कु. गीता बहन। 10.**सोनीपत (से.15)**- हरियाणा के पंचायती राज मंत्री भ्राता धर्मवीर को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. प्रमोद बहन। 11.**बड़चणा**- उड़ीसा के पंचायती राज मंत्री भ्राता कल्पतरू दास को राखी बाँधते हुए ब्र.कु. मानसी बहन। 12. **आनन्दपुर साहिब**- पंजाब के स्वास्थ्य मंत्री भ्राता मदन मोहन मित्तल को राखी बाँधते हुए ब्र.कु. रीमा बहन।